

महात्मा गोखले

Onkar Press Allahabad

॥ ओ३म् ॥

ओंकार आदर्श चरित माला की तृतीय पुस्तक ।

महात्मा गोखले

(राजनैतिक सन्यासी और निष्काम कर्मयोगी)

"नरपति हितकर्ता द्वेष्यतां याति लोके।
जनपद हितकर्ता त्यज्यते पार्थिवेन ॥
इति महति विरोधे विद्यमाने समाने ।
नृपति जनपदाना दुर्लभ कार्य्यकर्त्ता ॥"

लेखक

पण्डित नन्दकुमार देव शर्मा

(भूतपूर्व सम्पादक—"बिहारबन्धु" 'आर्यमित्र" सयुक्त सम्पादक—सद्धर्मप्रचारक आदि)

सम्पादक तथा प्रकाशक

पण्डित ओङ्कारनाथ वाजपेयी

पडित ओङ्कारनाथ वाजपेयी के प्रबन्ध से ओंकार प्रेस,
प्रयाग में छपा ।

आश्विन संवत् १९७८

तृतीय संस्करण] [मूल्य ।=)

भूमिका

संसार के महापुरुषों के जीवनचरितों को देखकर अथवा पढ़कर यह पता लगता है कि जितने महापुरुष संसार में हुये हैं उन्होंने या तो किसी महापुरुष के जीवन को स्वयं देखकर उसका अनुकरण किया है अथवा उन्होंने अपने पूर्वजों की जीवन कथाओं को सुना है जिनको सुनकर उन्हें अपने जीवन का आदर्श बनाया है। प्रमाण के लिये महावीर नेपोलियन को ले लीजिये। बचपन ही से उसे वीर योधाओं के जीवन चरित पढने में रुचि होगई थी। यूनान के योधा जगविजयी सिकंदर तथा रोम के युद्ध कुशल सीजर के जीवनचरितों में उसकी विशेष भक्ति थी। वर्तमान सैंडो के जीवनचरित से पता लगता है कि हारक्युलस आदि यूनान के वीरों की पाषाण मूर्तियां को देखकर उसमें उन वीरों के जीवनचरित पढने की इच्छा हुई और उन्हें पढकर उसे अपने को महाबली बनाने का उत्साह हुआ। इसलिये छोटे बालक या बालिकाओं में अथवा नवयुवकों तथा नवयुवतियों में महात्माओं के जीवनचरित पढ़ने की रुचि उत्पन्न करना चाहिये। इसी उद्देश्य को सामने रखकर यह जीवनचरित माला निकालना आरम्भ किया है।

इसमें कोई सन्देह नहीं सर्वसाधारण ने इस पुस्तक का अच्छा आदर किया है जिसका प्रमाण यह है कि थोड़े ही दिनों

में महात्मा गोखले का जीवनचरित तीन बार छप चुका। सर्व साधारण की रुचि से उत्तेजित होकर हमने भी प्रत्येक मास में २ जीवनचरित प्रकाशित करने प्रारम्भ कर दिये हैं। इस प्रकार ४०० जीवनचरित निकालने का प्रबन्ध किया गया है आशा है हिन्दी प्रेमी सज्जन इस माला के स्थायी ग्राहक बनकर अपनी गुण ग्राहकता का परिचय देंगे।

निवेदक

ओङ्कार नाथ वाजपेयी

महात्मा गोखले

राजनैतिक संन्यासी और निष्काम कर्मयोगी



प्रस्तावना

"मरना भला है उसका जो अपने लिये जिये।
जीता है वह जो मर चुका स्वदेश के लिये॥"

इस संसार में मरना जीना सबको है, कोई अमर होकर नहीं आया है। पर वे पुरुष धन्य हैं जो अपनी जननी और जन्मभूमि की सेवा करते हुये सद्गति को प्राप्त होते हैं। इस संसार में अगणित नरनारी नित्यप्रति जन्म लेते हैं और मरते हैं, पर उनका मरना, जीना बराबर है। किन्तु जिन्होंने अपने देश की सेवा की है, जिन्होंने अपना दुःख सुख देश के दुःख सुख में समझा है, जो देश की परिस्थिति के सामने अपना सुख दुःख कुछ नहीं समझते, वे ही पुरुष धन्य हैं। तब ही तो कवि कहता है कि उनका मरना भला है जो अपने स्वार्थ के अतिरिक्त और कुछ चिन्ता नहीं रखते, वे जीते हुये भी मरे के समान हैं। उनका जीना मरना ही क्या है? परन्तु जो इस संसार में आकर अपना कर्तव्य

पूरा कर गये हैं जिन्होंने अपने कर्त्तव्य पालन करने में किसी विघ्न बाधा की परवाह नहीं की जिनके जीवन का मूल मन्त्र "जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" रहा है। जिनकी दीन दुखियों की भलाई में, देश की सेवा में ही जीवन व्यतीत करते हुए मृत्यु हुई है वे मरे भी जीते हैं। उनके त्याग देश उनके कार्य और सब से बढ़कर उनका आदर्श जीवन उन्हें अमर बनाये रखता है। "अमरफल" "अमृतफल" आदि की बहुतसी कथाएं सुनने में आती हैं, पर सच पूछिये तो वह "अमरतत्व" देश सेवा में ही है। देश सेवा करनेवालों को ही अमरत्व प्राप्त होता है। भारतमाता के ऐसे ही सपूतों में से महात्मा गोखले थे जिन्होंने "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" का जाप करते हुए अमरता प्राप्त किया है। इस शताब्दी मे जिन महापुरुषों ने भारतीय राष्ट्र निर्माण और नव्य भारत के चरित्रगठन करने का प्रबल प्रयत्न किया है उनमें महात्मा गोखले का भी बहुत ऊंचा स्थान है। उन के जीवन का व्रत केवल देश सेवा के अतिरिक्त और कुछ नहीं रहा था। लगातार तीस वर्ष तक उन्होंने देश सेवा की थी। तीस वर्ष तक उन्हें दिन और रात देश की चिन्ता रहती थी। सरकार और सर्वसाधारण दोनों के वे विश्वास भाजन रहे थे, राजा और प्रजा दोनों के वे आदरणीय मित्र थे। आशा है उनके आदर्श चरित्र से पाठक अनेक शिक्षाएँ ग्रहण करेंगे।

जन्मभूमि और वंशपरिचय

जननी और जन्मभूमि का मनुष्य के जीवन से घनिष्ट सम्ब-

न्ध होता है इसमें तनिक भी सन्देह करनेका स्थान नहीं है कि जिस प्रकार गर्भवती माता के गुण कर्म और स्वभाव का गर्भ में स्थित सन्तान पर प्रभाव पडता है वैसेही जन्म-भूमिकी परिस्थिति बालक पर कुछ न कुछ अपना रङ्ग जमाये बिना नहीं रहतो है। गोखले के जन्म का सोभाग्य उस महाराष्ट्र प्रदेश को प्राप्त हुआ है जो मुसलमानों के समय में रणच-ण्डिका का प्रधान स्थल बना था। महाराष्ट्र भूमि सदैवसे वीरों और राजनीतिज्ञों की खान बनी रही है शिवाजी जैसे महावीर को उत्पन्न करने का गोरव महाराष्ट्र प्रदेश को ही प्राप्त है। शिवाजी के गुरुसमर्थ स्वामी रामदास, तुकाराम, एकनाथ, श्रीब्रह्मेन्द्र आदि साधु सन्तों की जन्मभूमि और क्रीडास्थल होने का गोरव महाराष्ट्र प्रदेश कोही है। नानाफडनवीस जैसे राजनीतिज्ञ इसी महाराष्ट्र भूमि में पले थे। कहने का साराश यह कि विद्या, बुद्धि और बल का सदैव से महाराष्ट्र प्रान्त घर रहा है। आज भी एक बङ्गाल को छोडकर भारतवर्ष का ऐसा कोई प्रान्त नहीं है जो महाराष्ट्र प्रान्त की समता कर सके। रानाडे, चिपलूणकर, तैलङ्ग, तिलक, मान्डलिक, आपटे, भण्डारकर, गोखले, पराञ्जपे आदि नर रत्नों के जोड का एक बङ्गाल को छोडकर दूसरे प्रान्त में कोई दिखलाई नहीं पडता है। भारतवर्ष में विशेषतया महाराष्ट्र प्रान्त में राष्ट्रीय और सामाजिक विषयों में केवल ब्राह्मण ही अगुआ होते आये है और इस समय भी है, उनमें भी कोकणस्थ और चितपावन ब्राह्मण, विशेषत कोलाबा और रत्नगिरि जिले के बडे बडे नामी होते आये है। जिस कोकणस्थ जाति में उत्पन्न होने का सोभाग्य रानाडे, तिलक, नानाफडनवीस

आदि को प्राप्त है उसी कोकणस्थ ब्राह्मण जाति के एक निर्धन ब्राह्मण के यहां कोल्हापुर जिले के कगारा गांव में सन् १८६६ में एक बालक का जन्म हुआ। उस समय किसी को क्या खबर थी कि एक दिन यह बालक भारतवर्ष का एक रत्न होकर 'महात्मा गोखले' के नाम से विख्यात होगा। एक दिन इस बालक को लोग अपना सिरताज समझेंगे, जो दीन दुखियों का, बूढ़ी भारतमाता का दुख दूर करने का बीड़ा उठावेगा। जो सारे देश को ही अपना कुटुम्ब समझेगा।

बाल्यकाल और शिक्षा

धन की अपेक्षा चरित्र का विशेष महत्व है। मनुष्य का भूषण शील ही है, जिसका चरित्र उत्तम है, उसके आगे धन, दौलत सब तुच्छ है। वे लोग जो सोने चांदी की जगमगाहट में अपने पापों को छिपाये रहते हैं कदापि उन लोगों की समता नहीं कर सकते हैं जो अपने शील, स्वभाव और आचरण को बिगड़ने नहीं देते है। यद्यपि गोखले के माता पिता दरिद्र थे, उनके पास धन नहीं था तथापि वे उच्च चरित के और अच्छे कुल के थे। उनके चरित के महत्व का केवल इसी से परिचय मिलता है कि उन्होंने निर्धन होने पर भी मिस्टर गोखले की शिक्षा में किसी प्रकार की कमी नहीं की थी।

गोखले की बाल्यावस्था की बहुतसी विचित्र बातें है, जिनको यहां लिखने का स्थान नहीं है। परन्तु इसमें सदेह नहीं "होनहार बिरवान के होत चीकने पात" इस लोकोक्ति के अनुसार सब को बालक* गोपालराव होनहार प्रतीत

* दक्षिण प्रांत में यह चाल है कि अपने नाम के साथ पिता का

होते थे बालक गोपालराव सुशील होने के साथ ही साथ लज्जाशील और सङ्कुचित स्वभाव के भी थे। अपने अध्यापकों को किसी विषय में धोखा देना अथवा मिथ्या बोलना उन्हें कभी पसन्द नहीं था कहते हैं जिन दिनों मिस्टर गोखले स्कूल में पढते थे, उस समय एक बार एक अध्यापक ने अपने समस्त विद्यार्थियों को घर पर गणित का एक प्रश्न हलकरने को दिया। गोखले ने घर पर किसी दूसरे व्यक्ति की सहायता से गणित का प्रश्न हल कर लिया, और जब दूसरे दिन अध्यापक ने दरजे में देखा कि सिवाय गोखले के कोई विद्यार्थी उस प्रश्न को करके नहीं लाया है, तब उसने गोखले से दरजे में प्रथम स्थान पर बैठने को कहा। अपने अध्यापक की यह आज्ञा सुनकर बालक गोखले फूट फूट कर रोने लगे, उनको रोते देखकर अध्यापक तथा सब विद्यार्थियों को आश्चर्य हुआ। अध्यापक ने बडे प्रेम से उनको शान्त करके रोने का कारण पूछा, तब उन्होंने सच्चा हाल कह दिया कि "यह प्रश्न मैंने दूसरे की सहायता से किया है, स्वयं नहीं किया है। प्रथम स्थान पर बैठने का मुझे कोई अधिकार नहीं है" । इतना कह कर मिस्टर गोखले चुप ही नहीं रहे किन्तु उन्होंने दूसरे से पूछकर प्रश्न हल करने के लिये अपने को यह दण्ड भी दिया कि सप्ताह के बाकी दिनों में वे क्लास में सब से अन्तिम स्थान पर ही बैठे। क्या विद्यार्थी गोपालराव के चरित की यह घटना, हमारे यहा के आजकल के छात्रों को अनुकरणीय

भी नाम लिखा करते हैं मिस्टर गोखले के जन्म का नाम गोपालराव था। बडे होने पर आधा उनका नाम गोपाल और आधा पिता का नाम कृष्ण मिलकर, गोपालकृष्ण हुआ।

नहीं है ? वर्तमान समय में परिश्रम से जी चुरानेवाले केवल विद्यार्थी ही नहीं, किन्तु वे लेखक, ग्रन्थकार और पत्र सम्पादक भी अपनी बुद्धि को कष्ट न देकर, जो इधर उधर चुरा चुरा कर दूसरे के सिर पर त्यौहार मनाया करते हैं, इस से बहुत कुछ शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं।

छात्रावस्था में ही गोखले अपनी तीव्र स्मरणशक्ति, अपूर्व परिश्रम और सावधानी के लिये विख्यात होगये थे। उस समय ही लोगों को विश्वास होगया था कि जिस किसी कार्य का यह बीड़ा उठावेंगे उसको सीमा तक पहुंचाये विना नहीं रहेंगे जैसे ये छात्रावस्था में कुशाग्र बुद्धि थे, वैसे ही इनकी शिक्षा में कमी नहीं हुई। सुनते हैं, जब गोखले बहुत छोटे थे तब ही उन्हें अपने पितृ वियोग का दुःख सहन करना पड़ा था। किसी ने सच कहा है कि जो माता पिता अपने पुत्रको शिक्षा नहीं देते हैं, वे उसके शत्रु हैं। गोखले के माता पिता ने निर्धन होने पर भी गोखले को शिक्षा से वंचित रखकर शत्रुता नहीं की। उन्होंने इस सम्बन्ध में अपना यथेष्ठ कर्त्तव्य पालन किया। गोखले के पिता की मृत्यु हो जाने पर उनकी शिक्षा में कोई बाधा उपस्थित नहीं हुई। पिता की मृत्यु होजाने पर सारे परिवार का भार उनके बड़े भ्राता पर आ गया था परन्तु इससे उनकी शिक्षा में रुकावट नहीं हुई। बड़े भ्राता ने भी अपने कनिष्ठ सहोदर की शिक्षा में यथाशक्ति कसर नहीं रक्खी। हत भाग्य भारतवर्ष में बहुत से होनहार विद्यार्थियों की शिक्षा में कमी दरिद्रता के कारण हो जाती है, पर भारत माता के सौभाग्य से गोखले के नसीब में यह बात नहीं हुई। उन्होंने कोल्हापुर के राजाराम कालेज

ने इन्टरमीजिएट अर्थात् एफ० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। इस परीक्षा में उत्तीर्ण होजाने पर वे बम्बई के एल-फिन्स्टिन कालेज में और कुछ दिनों तक पूना के "डक्कन कालेज" में बी० ए० की परीक्षा के निमित्त पढते रहे।

१८ वर्ष की अवस्था में, बम्बई की यूनिवर्सिटी से बी० ए० की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए। उस समय आजकल की भांति सोलह वर्ष से कम की यूनिवर्सिटी में मेट्रिक (एन्ट्रेन्स) परीक्षा की पख न थी, यदि यह पख होती तो गोखले महोदय कदापि अठारह वर्ष की अवस्था में बी० ए० पास न होने पाते। आजकल एन्ट्रेन्स की परीक्षा में सोलह वर्ष की सीमा होजाने से न मालूम गोखले महोदय के समान और प्रतिभा शाली कितने ही छात्रों को निराश होकर अपना समय नष्ट करना पडता है।

स्वभाव में परिवर्तन

कालेज में पढते समय गोखले महोदय ने केवल विद्या सम्बन्धी ही उन्नति नहीं की किन्तु उनके जीवन और स्वभाव में बहुत कुछ परिवर्तन हुआ। गोखले के माता पिता पुराने ढङ्ग के कट्टर ब्राह्मण थे। वे भोजन के छून छात आदि के माननेवाले थे। कालेज में पहुंचने से पहले गोखले महोदय भी भोजन सम्बन्धी छून छात आदि के विचारों में पले थे। पहले ही दिन जब वे कालेज के बोर्डिङ्गहाउस (छात्राश्रम) में पहुंचे तब उन्हें अपने साथियों का पीताम्बरादि कोई रेशमी वस्त्र भोजन के समय पहनते हुए न देखकर और मामूली

कपडे कमीज धोती वगैर पहनकर भोजन करते हुए बडा आश्चर्य हुआ। वे सङ्गी साथियों से अलग चौका में पीताम्बर अथवा रेशमी धोती पहन कर भोजन करने लगे परन्तु उनका यह नियम चल नही सका। हमारे पाठकों में से जो स्वय विद्यार्थी अवस्था में रहे हों अथवा जिन्हें स्कूल के विशेषत कालेज के छात्राश्रमों के विद्यार्थियों की रहन सहन देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ हो उन्हें इसका अच्छी तरह से अनुमान होगया होगा कि मिस्टर गोखले अपने भोजन सम्बन्धी पुराने नियम को पालन करने में क्यों नहीं समर्थ हो सके। प्राय विद्यार्थियों का एक दूसरे को छेड छाड करने का चचल स्वभाव हुआ करता है। गोखले महोदय चञ्चल स्वभाव के नहीं किन्तु शान्ति प्रिय थे, परन्तु उनके साथी जब कभी वे भोजन करने बैठते थे तब उनमें छेड छाड किये बिना नहीं रहते थे। गोखले के साथी सिर्फ मुह सेही गोखले से छेड छाड की बातें करके चुप नहीं होजाते थे किन्तु उनका चौका छू लेते थे भोजन करते समय वस्त्र छू लेते थे। गोखले महोदय के साथी जान बूझकर उनको चिढाने के लिये उन्हें स्वय छू लेते थे। पहले ही पहल हमारे चरितनायक अपने सगी साथियों के इस व्यवहार से दुःखित हुए और कुछ क्रोधित भी हुए। किन्तु क्रोधित होने पर भी उन्होंने अपने साथियों के प्रति शान्ति और उदारता का परिचय दिया। वे अपने साथियों के इस व्यवहार से चुपचाप शान्ति पूर्वक बैठ गये। उन्होंने अपने साथियों के व्यवहार की छात्राश्रम के व्यवस्थापक (सुपरिन्टेन्डेन्ट) प्रभृति से कुछ शिकायत नहीं की। और धीरे धीरे उन्होंने अपने साथियों के समान

ही भोजन करना आरम्भ कर दिया, यदि वे पुराने और कट्टर विचारों में ही पडे रहते तो भविष्य में उन्हें बडी बडी कठिनाइयों का सामना करना पडता। वे विलायत वासियो को इस देश की दुर्दशा सुनाने के लिये न जाने पाते। कहते है इन दिनों जब कभी सामाजिक सुधार आदि की चर्चा चला करती तब गोखले महोदय कहा करते थ —मैं अपने कालेज के मित्रों का विशेष कृतज्ञ और अनुगृहीत हूं जिन्होंने मुझसे यह कट्टरपन छुडाया था।"

खेलों का अनुराग

प्राय यह बात देखने में आती है कि जो मनुष्य क्रियाशील होते हैं उनकी क्रियाशीलता खेलकूद में भी अपना विचित्र रूप धारण कर लेती है। चाहे जिस महापुरुष के चरित्र की आलोचना कीजिये तो बचपन में खेलकूद म उसकी क्रियाशीलता का अनूठा ही पता लगेगा। महावीर नेपोलियन की बाल्यावस्था की खेल कूद की बहुत सी अद्भुत कथाए ह। और कितने ही महापुरुषों के जीवनचरितो में बालपन की विचित्र कथाये सुनने में आती ह। मिस्टर गोखले के सबध में भी "न्यू इण्डियन" "नामक समाचार पत्र में लिखा है कि छात्रावस्था में मिस्टर गोखले को खेल कूद में बडा अनुराग था। जब कभी वे ताश खेलते थे उस समय उनका साथी खिलाडी ठीक तौर से न खेलता तो वे नाराज होजाते थे। जब कोई उनका मित्र उनके समान ताश खलता तब उनकी प्रसन्नता का ठिकाना नहीं रहता था उस समय व प्रसन्नचित्त

प्रतीत होते थे और कहने लग जाते थे कि 'ये लोग मुझे जान बूझकर छेडते है क्योंकि ये जानते है कि मै इनकी ऊटपटाग बातों से चिढ जाता हू। वस्तुत इस सरल स्वभाव के कारण ही मिस्टर गोखले पर अगणित व्यक्तियों की भक्ति और श्रद्धा हुई है। इस सरल स्वभाव और निष्कपट व्यवहार के कारण ही हजारों आदमी उनके अनुयायी हुए है। इस प्रकार की मिस्टर गोखल के चरित्र की बहुत सी घटनाये है जिनके यहा लिखने का स्थान नही है। किन्तु उनके जीवन की घटनाओं से प्रतीत होता है कि वे आरम्भ से ही सीधे सच्चे स्वभाव के थे उन्हें दिखावट और सजावट बिलकुल पसद नही थी।

अध्यापन-कार्य

जिस समय मिस्टर गोखले बम्बई यूनीवर्सिटी मे ग्रेज्युएट अर्थात् बी० ए० पास हो चुके थे उससे पहले ही स महाराष्ट्र प्रान्त में नवीन उत्साह, नवीन ज्योति स्फुरित होरही थी। महामति रानाडे और चिपलूणकर जैसे देश भक्त और उद्भट विद्वानों के प्रबल प्रयत्न से महाराष्ट्र प्रान्त में नवीन युग उपस्थित होगया था। जिस स्वदशी आन्दोलन का ज्वार भाटा बङ्गविच्छेद के कारण सन् १९०५ में समस्त भारतवर्ष में उठा था। उसी स्वदेशी आदोलन की धूमधाम महाराष्ट्र प्रान्त मे पहले ही से होरही थी, इस आन्दोलन के कारण ही सन् १८७० में महाराष्ट्रप्रान्त की पेशवाओ की राजधानी पूना में स्वर्गीय प० गणेश वासुदेव जोशी की अश्रान्त चेष्टा से सार्वजनिक सभा की नीव पड चुकी थी। चिपलूणकर, नाम जोशी, आपटे, आगारकर और तिलक महोदय के उद्योग से

पूना में न्यू इङ्गलिश स्कूल की स्थापना हो चुकी थी जो पीछे फरग्यूसन कालेज में परिणित होगया। इस देशभक्ति के भाव ने मिस्टर गोखले पर भी अपना रङ्ग जमाया। गोखले के बड़े भाई को यह आशा थी कि वे (गोखले) पढ़कर बहुत सा धन कमावेंगे, जिससे दरिद्रता दूर होगी। परन्तु उनकी आशा निराशा में परिणित हुई। गोखले महोदय ने अपने परिवार की दरिद्रता दूर न करके अपनी भारत माता की दरिद्रता के दूर करने की ठानी।

कहते हैं गोखले पहले एञ्जीनियरिङ्ग पढ़ना चाहते थे। किन्तु परमात्मा जो कुछ करता है, अच्छाही करता है भगवान की कृपा से गोखले एञ्जीनियरिङ्ग पढ़ नहीं सके हमारे देश में एञ्जीनियर, वकील डाक्टर आदि की कमी नहीं है। परमात्मा को यह स्वीकार न था कि गोखले महोदय भी एक बड़े एञ्जीनियर होकर ही रह जायं। उसको तो उनके हाथ से बड़े बड़े काम कराने थे। सुनते हैं जहा गोखले के बड़े भाई उनके देश सेवा के व्रत को देखकर निराश हुए थे वहा उनकी माता ने प्रसन्नता पूर्वक भारतमाता की सेवा के लिये आज्ञा देदी थी।

बी० ए० पास होने के थोड़े दिन पीछेही मिस्टर गोखले न्यू इङ्गलिश स्कूल में केवल ४०) चालीस रुपये मासिक पर अध्यापक का कार्य करने लगे। वे अङ्गरेजी साहित्य के अध्यापक हुए। उनसे छात्र मण्डली सदैव प्रसन्न रहती थी। उन दिनों मिस्टर गोखले को अङ्गरेजी साहित्य से विशेष अनुराग था। यह पहले कहा जा चुका है कि मिस्टर गोखले की स्मरण शक्ति बड़ी तीव्र थी। वे जिस किसी विषय को दो बार

पढ लेते थे, उनको कभी भूलते नहीं थे, उनकी स्मरणशक्ति ने उनको अङ्गरेजी की योग्यता बढाने में और भी सहायता दी। उन्हें—"टाइम्स आफ इण्डिया" जैसे पत्रों के कठिन लेख पढत ही कण्ठ हो जाते थे। बेकन, मिल्टन, शेक्सपियर, आदि अङ्गरेजी की कविताएँ तथा अन्य गद्य लेखकों के लेख उन्हे दो एकबार ध्यान पूर्वक पढने से ही कण्ठ होजाते थे। रात दिन अङ्गरेजी साहित्य के अच्छे अच्छे ग्रन्थ अध्ययन करते थे, जिससे थोडे दिनों में ही उनका अङ्गरेजी भाषा पर अधिकार पूरा होगया था और अपने छात्रों को भी बडे प्रेम से पढाते थे। इस भांति मिस्टर गोखले अध्यापक का कार्य्य करते हुए भी स्वयं अध्ययन करते थे।

फ़रग्यूसन कालेज से सम्बन्ध

जिस युवावस्था में मनुष्य के हृदय में अनेक प्रकार की इच्छाओं और लालसाओं की तरङ्गें उठा करती हैं, वहां महात्मा गोखले की महत्वाकाक्षाएँ देश सेवामें परिणत होगई। जहां हतभाग्य इस देश के नवयुवकों को युवावस्था में केवल भोग विलास के अतिरिक्त और कुछ सूझना ही नहीं है वहा महात्मा गोखले ने ससार के सब सुखों पर लात मारकर अपनी समस्त उच्चाकाक्षाओं को भारतमाता के चरणों में सादर समर्पित कर दिया। उन्होंने सच्चे मन से अनुभव किया कि देश के नवयुवकों के हृदय में पवित्र विचारों का सञ्चार किये बिना देश की स्थिति सुधर नहीं सकती है। और यह कार्य्य अच्छे अध्यापकों द्वारा ही होसकता है। नवयुवकों के आचार

विचार ढालने और स्वभाव परिवर्तन करने में एक सुयोग्य अध्यापक विशेष कार्य्य कर सकता है। बस इस विचारवश उन्होंने "न्यू इङ्गलिश स्कूल" के फरग्यूसन कालेज में परिणत हो जाने से उक्त कालेज की अध्यापकी स्वीकार करली। और वे पीछे• "डेक्कन एेज्यूकेशन सासाईटी" दक्खन शिक्षा समिति के Life member (जीवन भर के लिये सभासद्) होगये। उन दिनों फरग्युसन कालेज में अङ्गरेजी के एक अच्छे प्रोफेसर की आवश्यकता थी। मिस्टर गोखलेने इस कार्य का भार अपने ऊपर लिया। सुना जाता है, जब वे अपने विद्यार्थियों को अङ्गरेज़ी साहित्य सम्बन्धी टिप्पणियां (नोट्स) लिखाते थे, तब वे बड़ी जल्दी जल्दी गम्भीर विषयों पर नोट्स बोलते जाते थे। विद्यार्थियों को नोट्स लिखने में बहुत शीघ्रता करनी पड़ती थी। उनका अंग्रजी में शब्द लालित्य और वाक्य विन्यास सुन्दर होता था। अंगरेजी के नित्य नये मुहावरे

*दक्खिन शिक्षा समिति के सभासदों को पूना के फरग्युसन कालेज और समिति के अंतर्गत स्कूलों में ७५) पचत्तर रुपये मासिक पर बीस वर्ष तक शिक्षक का कार्य करना पड़ता है उस समय सोसाइटी उनका जीवन बीमा (आईकाइरयोरंस) तीन हजार का करा देती है। सोसाइटी उनके जीवन की बीमा कराई मासिक खर्च भी देती है। बीस वर्ष पीछे उनको तीस रुपया मासिक पेन्शन मिलती है। सोसाईटी के अहातेमें प्रोफेसर अपने रहने के लिये मकान बना सकते हैं। सोसाइटी की इमारत लगभग चार लाख रुपये की बनी हुई है। कालेज को सरकार से पचास हजार रुपये की विशेष सहायता के अतिरिक्त दस हजार रुपया वार्षिक सहायता भी मिलता है बम्बई प्रांत, विशेषत दक्षिण प्रांत के लोग भी इसकी सहायता करते हैं। कुछ दिन हुये स्वर्गीय राव साहब वी० एन० माण्डलिक ने लगभग पचास, साठ हजार रुपये की पुस्तकें इस कालेज को दान दी थीं।

उनके मुख से निकलते थे। वे केवल अंग्रेजी ही नहीं अर्थशास्त्र, इतिहासादि सभी विषय पढाते थे।

मिस्टर गोखले ने जिस भांति अंगरेजी में योग्यता बढायी थी, उसी भाँति उन्होंने अर्थशास्त्र, इतिहासादि विषयों में भी अपनी योग्यता का विस्तार किया। केवल संस्कृत को छोडकर वे कालेज में अर्थशास्त्र, इतिहासादि सभी विषयों पर व्याख्यान दिया करते थे। परन्तु उनका सबसे अधिक प्रिय विषय "गणित" था, इङ्गलिश स्कूल के अध्यापक रहते समय ही उन्होंने गणित में अच्छी योग्यता प्राप्त करली थी। उन दिनों उन्होंने एक "अङ्कगणित" लिखी थी। जो एक अंगरेजी पुस्तक विक्रेता ने प्रकाशित की थी। जिससे मिस्टर गोखले को अच्छी आमदनी हुई और शायद जिससे अब भी कुछ आमदनी होती है। बम्बई प्रान्त में मिस्टर गोखले की अङ्कगणित का बडा प्रचार हुआ। कहने का तात्पर्य यह है कि मिस्टर गोखले केवल अङ्गरेजी साहित्य के ही ज्ञाता नहीं थे, किन्तु और और विषयों के भी अच्छे मर्म्मज्ञ थे। इतिहास में वे ऐसे प्रवीण थे कि एम० ए० न होने परभी एम० ए० के इतिहास की परीक्षामें परीक्षक हुये थे।

ऊपर लिखा जा चुका है, मिस्टर गोखले फरग्युसन कालेज में एक संस्कृत को छोडकर अङ्गरेजी, गणित, इतिहास अर्थशास्त्र आदि सभी विषय पढाया करते थे परन्तु थोडे ही दिन पीछे वे अर्थशास्त्र और इतिहास के प्रोफेसर होगये। इन विषयों को व कालेज के छोडने के समय तक बराबर पढाते रहे। उनकी इतिहास की योग्यता के सम्बन्ध में ऊपर लिखा जा चुका है पर अर्थशास्त्र का भी उन्होंने इतना मनन किया था कि इस

विषय के वे अथारिटी (प्रमाण) समझे जाते थे। अर्थशास्त्र के वे कैसे विलक्षण विद्वान् थे, उसका पता उनकी उन वक्तृताओं से लगता है, जो उन्होंने समय समय पर बड़े लाट साहब की कौंसिल में बजट के सम्बन्ध में दी थीं। मिस्टर गोखले के अर्थशास्त्र सम्बन्धी व्याख्यान विद्यार्थियों को इतने अच्छे प्रतीत होते थे कि जब वे कालेज से विदा हुये तब सब लोग यही कहते थे कि उनकी विदाई से कालेज की बहुत भारी क्षति हुई है।

विद्यार्थियों के प्रति व्यवहार

अध्यापक रहते समय मिस्टर गोखले का अपने छात्रों के प्रति बड़ा अच्छा व्यवहार था। सुना जाता है जब वे "न्यू इङ्गलिश स्कूल" में पढ़ाते थे तब प्रत्येक विद्यार्थी की यही इच्छा होती थी कि वह मिस्टर गोखले की ही कक्षा में पढ़ने जाव। फरग्युसन कालेज में जिन दिनों वे अध्यापक थे, उन दिनों भी प्रत्येक विद्यार्थी उन से कुछ पढ़ना अपने लिये बड़ा गौरव समझता था। मिस्टर गोखले का विद्यार्थियों को पढ़ाने और जटिल विषयों को समझाने का ढङ्ग बड़ा सुन्दर था। पर जब कभी किसी विद्यार्थी के कुछ बात समझ में न आती और कालेज में समय न रहने पर पूछता तो वे कह देते थे कि बारबार बतलाने समझाने का समय नहीं है, परन्तु जब कभी कोई विद्यार्थी उनके घर पर पहुंचता तो वे उसको बड़े प्यार से जो कुछ वह पूछता था, बतलाते थे। अच्छी तरह से उसको समझा देते थे। इतने पर भी वे विद्यार्थियों से मिलते जुलते समय अपने मान

मर्यादा का पूरा ध्यान रखते थे। ऐसी कोई बात नहीं होने देते थे, जिससे कोई विद्यार्थी धृष्टता कर सके। विद्यार्थियों की उन पर विशेष भक्ति और श्रद्धा थी, प्राय सभी विद्यार्थी उनका मान करते थे।

विद्यार्थियों के पढाने समय मिस्टर गोखले इस बात का बड़ा ध्यान रखते थे कि उनके मुह से कोई अयोग्य अनुचित वाक्य न निकल जाय। कहते हैं जब कभी अगरेजी साहित्य पढ़ाते समय किसी काव्य में शृगाररस की कथा आ जाती थी तब वे अपने पाकेट में से रूमाल निकाल कर अपने मुह में लगा लेते थे उनका चेहरा सुर्ख होजाता था। विशेषत लडकियों को शृङ्गाररस की कविता पढ़ाते समय उनको अत्यन्त लज्जा आती थी। जिस समय वे शृगाररसकी कविता पढाते थे, उस समय उनके विद्यार्थी उनके चेहरे की ओर देखने लग जाते थे और वे इसलिये नहीं कि मिस्टर गोखले उन्हें कविता का क्या भाव समझा रहे है बल्कि इसलिये कि कविता के समझाते समय उनकी क्या दशा है?

कालेज की सेवा

यद्यपि मिस्टर गोखले उक्त कालेज के सस्थापक नहीं थे, तथापि इस समय कालेज की जेसी अच्छी आर्थिक स्थिति है उसके लिये उन्होंने बहुत परिश्रम किया था। वे उस कालेज का कार्य केवल प्रोफेसर होने के विचार से नहीं करते थे, किन्तु उन्हें उस सस्था से इतना प्यार था कि वे छुट्टियों में भी उसके लिये चन्दा जमा करने जाते थे। बड़ा परिश्रम करते थे

चन्दा उगाहने के लिये यात्रा करते थे। भारतवर्ष में जो लोग सार्वजनिक कार्य्यों के लिये चन्दा करते हैं वे ही जानते हैं कि ऐसे कार्यों के लिये चन्दा करते समय कितनी दिक्कतें उठानी पड़ती हैं। पर मिस्टर गोखले इसकी कभी चिन्ता नहीं करते थे। उन्होंने अपना कर्त्तव्य पालनही धर्म समझा था। कर्त्तव्य पालन करने में उन्हें जो यन्त्रणाएं होती थीं उन्हीं को सुख और आनन्द समझते थे। कालेज के मान अपमान का कुछ विचार नहीं करते थे। इस भाँतिसे उन्होंने कालेज के लिये लगभग दो लाख रुपये एकत्रित कर लिये थे। उन्होंने कालेज की सेवा लगातार अठारह बीस वर्षतक अत्यन्त परिश्रम से की थी। यद्यपि कालेज के प्रिन्सिपल न थे तथापि कालेज के लिये लगातार परिश्रम और उत्साह पूर्वक कार्य करने के कारण कालेज के कार्य सञ्चालन में वे प्रधान थे। वे कालेज के आधारस्तम्भ थे। कालेज उनको प्राणों से अधिक प्यारा था। कालेज की निस्वार्थभाव से सेवा करते थे। पूना में इस समय फरग्युसन कालेज का जो विशाल भवन बना हुआ है कहते हैं वह मिस्टर गोखले के प्रयत्न का ही फल है।

रानाडे का सत्सङ्ग

संसार में जितने पदार्थ दुर्लभ हैं उनमें किसी सज्जन का सत्संग होना अत्यन्त दुर्लभ है। चाहे गोखले महोदय का पूर्व सञ्चित कर्म कहिये, चाहे भारतवर्ष का सौभाग्य कहिये कि जिस समय मिस्टर गोखले फरग्युसन कालेज का कार्य करते थे, उस समय उनका न्याय मूर्ति, महात्मा

महादेव गोविन्द रानाडे से परिचय हुआ। जिस भाँति स्वामी विरजानन्द को आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती को देखकर अपने विचारों के प्रचार की आशा बंध गई थी। जिस भांति रामकृष्ण परमहंस को स्वामी विवेकानन्दसे वेदान्तके प्रचारकी बलवती आशा हुई थी, उसी भांति न्यायमूर्त्ति रानाडे महोदय को हमारे चरितनायक गोखलेके देखते ही हृदयमें बहुत सी आशाएं उत्पन्न होने लगीं। उन दिनों रानाडे महोदय पूना के नवयुवकों के परम प्रिय और आदर्श थे। यद्यपि वे सरकारी नौकरी में होनेके कारण प्रत्यक्ष रूप से राजनीति में भाग नहीं लेते थे तथापि वे देश सेवा के लिये नवयुवकोंको तैयार करनेमें नहीं चूकते थे। वे नवयुवकों को राजनीति की भी शिक्षा दिया करते थे। रानाडे भारतमाता के उन सपूतों में से थे, जो चौबीसों घण्टे देश की भलाई ही की सोचा करते हे। अतएव ऐसे महापुरुष की सङ्गति में रहकर यह कब सम्भव था कि महात्मा गोखले देश सेवा के व्रत से टलते। अनेक व्यक्तियों का ऐसा विचार है कि जिस भांति जान (अब लार्ड) मोरले ने स्वर्गीय मिस्टर ग्लैडस्टन की अपूर्व सङ्गति से लाभ उठाया था, उसी भाँति मिस्टर गोखले के जीवन में "महामति रानाडे महोदय के सत्सङ्ग से बहुत कुछ परिवर्तन हुआ। न्यायमूर्त्ति

---

*स्वर्गीय रानाडे—बम्बई हाईकोर्ट के जज थे उनका जन्म १८ वीं जनवरी सन् १८४२ को हुआ और मृत्यु १६ वीं जनवरी सन् १६०१ को हुई थी। महाराष्ट्र प्रान्त में जो कुछ जागृति इस समय होरही है, उसमें का बहुत कुछ यश रानाडे महोदयको ही प्राप्त है। सरकारी कर्मचारी होते हुये भी राजनीतिमें भाग लेते थे। कांग्रेस के साथ प्रति वर्ष जो इण्डियन सोशल कान्फ्रेंस

रानाडे और महात्मा गोखले दोनों ने देश सम्बन्धी अनेक विषयों पर पारस्परिक मनन किया। रानाडे को जैसा योग्य शिष्य मिला वैसे ही गोखले महोदय को सद्गुरु मिले। गुरु और शिष्य दोनों का समय देश की परिस्थिति के देखने भालने और विचारने में व्यतीत होने लगा। रानाडे महोदयके साथ साथ मिस्टर गोखले ने चौदह वर्ष तक अर्थशास्त्र का अध्ययन किया था। इस बात को गोखले महोदय स्वयं स्वीकार किया करते थे। वे निजू बातचीत तथा सर्व साधारण में रानाडे महोदय का नाम बडे आदर से लिया करते थे और उनको अपना गुरु कहा करते थे गोखले महोदय को न्यायमूर्ति रानाडे में बडी श्रद्धा और भक्ति थी जिसके विषय मे हम आगे लिखेंगे। परन्तु यहा पर गोखले महोदय के वे शब्द लिखे बिना नहीं रहा जाता है जो उन्होंने अपने गुरु के सम्बन्ध में कहे थे —'मेरे गुरु की मृत्यु के पश्चात् मुझे दुनिया कुछ दूसरी ही दिखलाई पडती है। कारण यह है कि जिस देवता ने एक बार दर्शन दिया था सदैव मन में उसके दर्शन की लालसा रही आती है।" रानाडे महोदय के

होती है यह रानाडे के उद्योग का ही फल है। रानाडे इतिहास, अर्थशास्त्रादि विषयों के बडे भारी विद्वान थे। सन् १८७९ में बम्बई प्रात मे पूना के वासुदेव बलवत नामक डकैत ने उत्पात मचाया था तब सर रिचर्ड टेम्पल की सरकार को रानाडे की ओर से सन्देह हुआ कि उन का भी वासुदेव बलवत से कुछ सम्बन्ध है या नहीं और उनकी पूना से धूलिया को बदली करदी। रानाडे को पूना शीघ्र छोड़ने की आज्ञा हुई। बम्बई सरकार का यह काम बम्बई हाईकोर्ट तक को खटका और उसने उसका प्रतिवाद किया परन्तु पीछे बम्बई सरकार को अपनी भूल ज्ञात हुई और रानाडे महोदय मिथ्या कलङ्क से मुक्त हुये।

दक्षता प्राप्त कर रहे थे तब वे बाईस वर्ष की अवस्था में बम्बई की प्रान्तिक कान्फरेंस में सम्मिलित हुए। इस कान्फरेंस में उनकी पहली पहिल जो वक्तृता हुई थी उसी से लोगों को विश्वास होगया था कि "एक दिन परमात्मा इनके हाथ से बड़े बड़े काम करायगा"। बम्बई की प्रान्तिक कान्फरेंस की वक्तृता सुनकर ही गोखले महोदय के प्रिय मित्र मिस्टर मधोलकर ने यह भविष्यद्वाणी की थी कि "एक दिन ये इण्डियन नेशनल कांग्रेस के प्रेसीडेण्ट होंगे" जो पीछे यह बात सत्य निकली। इसके पश्चात २५ वर्ष की अवस्था में वे बम्बई की प्रान्तिक कान्फरेंस के मन्त्री होगये थे।

लगातार तीसवर्ष से कांग्रेस की कार्य्य प्रणाली को देखते हुए आज बहुत से लोगों की विरक्ति होगई है। परन्तु आज से बीस वर्ष पहले कांग्रेस की प्रारम्भिक अवस्था में कांग्रेस की धूम मची हुई थी। सर्वसाधारण कांग्रेस में अत्यन्त उत्साह पूर्वक सम्मिलित होते थे। सन् १८८५ से सन् १८९४ तक कांग्रेस के अनेक स्थानों में अधिवेशन होते हुए, सन् १८९५ में कॉग्रेस की बारी पूना में आई। सन् १८९५ की कांग्रेस इस विशेष कारण से भी विख्यात है कि उस वर्ष *महात्मा तिलक* के प्रबल विरोध करने पर कांग्रेस के पिण्डाल में सोशल कान्फरेंस का अधिवेशन नहीं होने पाया था। उस वर्ष कॉग्रेस का जो अधिवेशन पूना में हुआ था उसके सेक्रेटरी मिस्टर गोखले हुए। उस समय गोखले महोदय केवल २९ वर्ष के थे। परन्तु उस समय उन्होंने इतने परिश्रम से कार्य्य किया कि कांग्रेस के पुराने पुराने कार्य्यकर्त्ता भी उन की कार्य्य प्रणाली की मुक्तकण्ठसे प्रशंसा करते थे।

वेलवी कमीशन में साक्षी

सन् १८६७ में भारतवर्ष के वृद्ध और पूज्य श्रीयुत दादा भाई नौरोजी के प्रयत्न से विलायत में वेलवी कमीशन वैठा। इस कमीशन का उद्देश्य भारत सरकार के खर्च की जाच और उस में उचित फेर फार करना था। इस कमीशन के प्रमुख लार्ड वेलवी थे। इसी से इस कमीशन का नाम वेलवी कमीशन पड़ा। इसी कमीशन में भारतवर्ष के मुख्य मुख्य व्यक्तिओं को साक्षी देने के लिये निमन्त्रण आया था। वम्बई प्रान्त से स्वर्गीय जस्टिस रानाडे महोदय इस कमीशन में साक्षी देने के लिये जानेवाले थे। पर इस देशका यह दुर्भाग्य है कि यहाँ सरकारी कर्मचारी किसी विषय में सरकार के विरुद्ध अपना मत खुल्लमखुल्ला प्रगट नही कर सकते हैं। उस समय लार्ड एलगिन भारतवर्ष के बड़े लाट थे उनकी गवर्नमेन्ट ने यह उचित नहीं समझा कि रानाडे सरकार के कर्मचारी होते हुए भारत शासन की आलोचना करें। इस लिये उन्होंने अपने स्थान में मिस्टर गोखले को भेजा। कमीशन में साक्षी देने के लिये गोखले महोदय ने लगातार छ महीने अर्थशास्त्र का अध्ययन किया और मिस्टर रानाडे ने उनको साक्षी देने के लिये तेयार किया। मिस्टर गोखले के अतिरिक्त मिस्टर वाचा भी बम्बई से इस कमीशन में साक्षी देने गये थे। मिस्टर वाचाभी अर्थशास्त्र के अच्छे पण्डित थे और वे मिस्टर गोखले से बीस, बाइस वर्ष अवस्था में बड़े थे। उस समय मिस्टर गोखले ३१ वर्ष के थे, परन्तु उन्होंने इस छोटी सी उम्र मेंही वहा पर जैसी साक्षी दी थी, उस से उनकी

है। इसके आगे मिस्टर गोखले ने भिन्न भिन्न देशों में जो सैनिक व्यय है, उसका लेखा दिखलाया था, उन्होंने इस साक्षी में सैनिक व्यय के घटाने पर विशेष बल दिया था साथ यह भी परामर्श दिया था कि यदि गोरी सेना की अपेक्षा देशी सेना रक्खा जाय तो कम खर्चा पड़ेगा।

इस भांति मिस्टर गोखले ने वेलबी कमीशन में न केवल सैनिक व्यय के सम्बन्ध में ही अपने विचार प्रकट किये थे परन्तु अन्यान्य विषय होमचार्ज (भारत से इंगलेण्ड को जो रक़म जाती है)।आदि पर भी अति उपयोगी और गम्भीर विचार प्रकट किये थे। सच पूछिये तो मिस्टर गोखले की साक्षी मार्के की है इतने दिन बीत जाने पर भी इस साक्षी में बहुत सी जानने, विचारने और समझने योग्य बातें है। ऐसे हिन्दी लेखक जो उपन्यासों के लिखते समय यहा तक अश्लीलता की भरमार कर देते हैं कि बहिन भाई का पारस्परिक प्रेम अश्लील शब्दों में पति पत्नी का सा दर्शाते हैं, यदि वे अपनी तथा अपने पाठकोंकी रुचि अश्लील उपन्यासों की ओर से हटाकर ऐसे विषयों का अनुवाद करें तो देश का बहुत कुछ कल्याण हो, पर अभी हिन्दी का ऐसा भाग्य कहां जो इस तरह की पुस्तकें हिन्दी पाठकों के हाथ में पहुचे, गोखले महोदय ने वेलबी कमीशन में जो साक्षी दी थी, उस का तथा बड़े लाट की कौंसिल में उन्होंने समय समय पर जो वक्तृताएं दी थीं उनके हिन्दी अनुवाद की बड़ी आवश्यकता है, क्या कोई हिन्दी प्रेमी इस ओर ध्यान देने की कृपा करेंगे?

——,०,——

पूना में प्लेग और गोखले

सन् १८९७ का वर्ष जहां वेलवी कमीशन में साक्षी देने के कारण मिस्टर गोखले के जीवन में स्मरणीय है, वहां पूना में प्लेग होने के कारण भी उक्त वर्ष भारतवर्ष के इतिहास तथा उनके जीवन में सदैव स्मरणीय रहेगा। उस वर्ष बम्बई प्रान्त में प्लग का विशेष प्रकोप था, पूना में भी प्लेगने भयङ्कर रूप धारण किया था सरकार ने पूना में प्लेग के दमन करने के लिये व्यवस्था की थी। इधर १७,१८ वर्ष से प्लेग का कष्ट सहन करते करते सर्वसाधारण का उतना भय नहीं रहा है जितना प्लेग का प्रारम्भ हुआ था तब था। उस समय प्लेग के कारण सर्वसाधारण में हाहाकार मच रहा था। प्लेग के सम्बन्ध में अनेक प्रकार की जनश्रुतियां सर्वसाधारण में प्रचलित होरही थी। सरकार ने प्लेग दमन के लिये कुछ ऐसे नियम बनाये थे, जो सर्वसाधारण को कठोर प्रतीत होने लगे, प्लेग के अवसर पर पूना में गोरे सिपाहियों का पहरा कुछ असहनीय हुआ। इसका परिणाम यह हुआ कि कि उन दिनों पूना में जो सरकारी अफसर डिप्टी कमिश्नर मि० रेंएड और दूसरे प्लेग आफिसर लेफ्टिनेएट आयरेस्ट का खून होगया। सरकार ने नाटूभाई को १८१८के तीसरे रेग्यूलेशन के अनुसार देश निकाला कर दिया। लोकमान्य तिलक तथा अन्य कुछ महाराष्ट पत्रों के सम्पादकों पर प्रजा और सरकार के बीच अशान्ति फैलाने का अभियोग चला था। मिस्टर गोखले को भी विलायत में पूना में प्लेग ड्यूटी पर जो गोरे सिपाही थे उनके मनमाने कार्यों का समाचार मिला।

गोखले महोदय विलायत में केवल "वेलवी कमीशन" में साक्षी देकर ही चुप नहीं रहे थे वहां वे सभाओं में, अखबारों में तथा पार्लीमेंट आदि के मेम्बरों में भी भारतवर्ष के सम्बन्ध में चर्चा किया करते थे, अतएव उन्होंने पूना के प्लेग सम्बन्धी समाचारों की विलायत में विशेष रूप से चर्चा की और इस विषय पर अधिक आन्दोलन किया। बम्बई गवर्नमेंट ने गोखले के इस आन्दोलन से अपना अपमान समझा और जब वे विलायत से भारतवर्ष को लौटे, तब बम्बई सरकार ने उनको विलायत में कही हुई बातों को साबित करने के लिये चिनोती दी और उनपर गवर्नमेंट मुकदमा चलाने को तैयार होगई। उस समय महाराष्ट्र प्रान्त की भयङ्कर परिस्थिति थी, एक ओर तो राजद्रोही मुकदमों की भरमार होरही थी दूसरी ओर प्लेग के कारण अनेक घरों में हाहाकार मच रहा था। जिन मित्रों के पत्र पाकर, मिस्टर गोखले ने विलायत में प्लेग सम्बन्धी सरकारी व्यवस्था के विरुद्ध आन्दोलन किया था उन मित्रों में से गोखले सहायता के लिये कोई आगे नहीं बढ़ा। इस भांति जब उन्होंने किसी को अपने पक्ष में साक्षी बनने के लिये नहीं देखा तब उन्होंने खुल्लम खुल्ला सरकार से क्षमा मांगली। कहते हैं रानाडे ने भी गोखले को गवर्नमेंट से क्षमा प्रार्थना के लिये सलाह दी थी इस अवसर पर क्षमा मागने के कारण, समय समय पर गोखले के प्रतिद्वन्दीगण उन पर भांति भांति के आक्षेप किया करते थे परन्तु उनको इससे कुछ दुःख नहीं हुआ और न उन्हें इस के लिये कभी पश्चाताप ही हुआ।

स्वागत और पुत्री की देशभक्ति

कहा जाता है गड़न मिश्र के घर में तोता मैना भी न्याय की चर्चा किया करते थे मालूम नहीं उपर्युक्त कथा कहां तक सच है परन्तु जिस समय मिस्टर गोखले इङ्गलैण्ड से बम्बई आये थे। उस समय एक ऐसी घटना होगई जिससे ज्ञात होता है कि उन्होंने अपने समान विचार अपने परिवार के बच्चों तकके कर रक्खे थे। जिस समय वे इङ्गलैंड से बम्बई आये उस समय उनका बम्बई में बड़ी धूमधाम से स्वागत हुआ। भीड़ इतनी घनी थी कि मिस्टर गोखले को लेने को जो गाड़ी आई थी वह भीड़ से बहुत दूर खड़ी हुई थी। मि० गोखले की लड़की भी आई थी जो बहुत भीड़ होने के कारण अपने पिता से मिल नहीं सकी। बहुत दूर से चुपचाप अपने पिता का स्वागत देख रही थी मिस्टर गोखले उससे सबसे पीछे मिले थे एक आदमी ने उस लड़की से कहा "तुम्हारे पिता अब हमारे हैं अब तुम्हारे नहीं है अब हमारे पिता होगये हैं।" लड़की ने तुरन्त यह जवाब दिया मुझे इसमें कुछ भी दुःख नहीं है एक पिता के बदले में मैं इतने भाइयों को पाऊंगी लड़की से यह उत्तर सुनकर उपस्थित जनमंडली ने बड़े जोरसे करतल ध्वनिकी।

प्लेग में सेवा

राजर्षि भर्तृहरि ने बहुत ठीक कहा है कि सब धर्मों से बढ़कर सेवाधर्म कठिन है। दीन दुखियों, पीड़ितों और अनाथों की सेवा और सहायता करना जितना कठिन है उतना

और कठिन कार्य नहीं है दुर्भाग्यवश हमारे देश में यह बहुत बुरी चाल चल निकली है कि हम लोग अपने व्यक्तिगत सुख दुखों का ही अनुभव करते हैं। दूसरे के सुख दुख की चिन्ता नहीं होती है। हम यह नहीं समझते कि आज जो विपत्ति हमारे पडोसी पर है कल हमको भी उसका सामना करना पडेगा। सच पूछिये तो हिन्दुओं के अध पतन के अनेक कारणों में से एक उनमें व्यक्तिगत स्वार्थ की जरूरत से अधिक मात्रा बढना और पारस्परिक संघशक्ति का अभाव भी है। गोखले महोदय ने पूना में पहुचकर प्लेग के अवसर पर सर्वसाधारण और सरकार की बहुत अच्छी सेवा की। बम्बई के तत्कालीन लाट लार्ड सेण्डहर्स्ट तक ने गोखले महोदय की सेवा सुश्रूषा की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की थी। प्लेग के दिनों में जहा बाप बेटा तक एक दूसरे को बीमारी की दशा में छोड जाते हैं वहा गोखले महोदय ने अपने विकट साहस का परिचय दिया था। छोटे २ मकानों में घुसकर प्लेग पीडितों के पास पहुचकर उनकी सेवा सुश्रूषा आदि की व्यवस्था की। प्लेग में गोखले की सेवा देखकर उनके कट्टर से कट्टर विरोधी भी शान्त होगये थे और उनकी प्रशंसा करने लगे थे।

प्रान्तिक कौन्सिल मे प्रवेश

किसी ने सच कहा है —कवि बनाये से नही बनते हैं। वे जन्म से होते हैं। सच पूछा जाय तो यह लोकोक्ति केवल कवियों ही के सम्बन्ध में नहीं घटती है प्रत्युत नेता वक्ता

लेखक सम्पादकादि के विषय में भी फबती है। जिस भांति कवि के लिये प्रतिभा की आवश्यकता है। उसी भांति बिना प्रतिभा बुद्धि और विद्या के कोई कभी नेता नहीं हो सकता है। जिस भांति सहृदय कवि की ही कविता का प्रभाव होता है उसी भाँति बिना सहृदयता के कोई नेता नहीं हो सकता है। एक देश के मुखिया के लिये सहृदय होना आवश्यक है। जिसके हृदय में दीनों के प्रति दया और दुखियोंके प्रति सहानुभूति नहीं है वह प्राकृत नेता नहीं है। यदि गोखले महोदय के जीवन पर दृष्टि की जाय उन्होंने इस देश के लिये जो कुछ कार्य किया है यदि उसपर विचार कियाजाय तो प्रतीत होगा कि वे प्राकृत नेता थे वे परमेश्वर के भेजे हुये मुखिया थे। उनके सहृदय और प्रतिभाशाली होने मे किञ्चित्मात्र भी सन्देह नहीं है। उन्होंने ३१ वर्ष की अवस्था में विलायत पहुंचकर वेलबीकमीशन में जो साक्षी दी थी कमीशन की जिरह में जिस भांति उन्होंने निर्भीक और शान्त चित्त से अपने जो विचार प्रकट किये थे। वह विषय पीछे लिखा जा चुका है। उसके पीछे वे ३४ ३५ वर्ष की अवस्था में बम्बई की प्रांतिक कौंसिल में सभासद निर्वाचित हुये। बम्बई की प्रान्तिक कौंसिल में सभासद रहते समय उन्होंने बड़े सारगर्भित विचार प्रकट किये थे। जिनका पता उनकी उस समय की वक्तृताओं से लगता है। उन्होंने केवल सरकारी कागजों के भरोसे ही न रहकर प्रजा से सम्बन्ध रखनेवाले विषयों का स्वयं मनन किया था। अनेक प्रकार से उनके सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त की थी। बम्बई की प्रान्तिक कौंसिल में वे सदैव प्रजा का पक्ष ग्रहण करते रहे थे। सबसे बढ़कर मिस्टर गोखले की बम्बई

विशेष रूप से देश सेवा करने के लिये विदा होरहे थे, तथापि वे हृदय में कालेज से अलग होने में दुःख का अनुभव कर रहे थे। उन्होंने उस समय कालेज से विदा होते समय जो शब्द कहे थे, उसमें उनका कालेज के प्रति हार्दिक प्रेम टपकता है। उन्होंने अपने विदाई के भाषण में एक स्थान पर कहा था —"बहुत दिन हुए, मैंने एक कहानी पढी थी कि एक आदमी समुद्र के किनारे रहता था, उसका बहुत अच्छा घर था, उसके बहुत सी उपजाऊ जमीन थी, उसके परिवार के लोग उससे बहुत प्रेम करते थे। परन्तु उसके सामने जो समुद्र था, उसका उसे विचित्र दृश्य दिखलाई पडता था। जब समुद्र की उत्ताल तरङ्ग शान्त होती थी तब उसे एक बच्चे के समान अपील करती हुई प्रतीत होती थी। जब समुद्र गरजता था, उसमें ज्वार भाटा उठता था, जब उसकी लहरें वेग से बढती थीं, तब उस समय मनुष्य को समुद्र क्रोधित और गरजते हुए सिंह के समान अपील करता हुआ प्रतीत होता था। अन्त में वह अपनी सब चीजों को एक छोटी सी नाव में रखकर, समुद्र के बीच में नौका को खेने लगा। दो बार लहरों ने उसको पीछे हटा दिया, एक तरह से उसे चेतावनी दी परन्तु उसने उसकी कुछ भी परवाह नहीं की तीसरी बार उसने फिर चेष्टा की और निष्ठुर समुद्र ने उसको हड़प लिया। आजभी मेरी कुछ ऐसीही स्थिति होरही है। यद्यपि मैं इस समय कालेज में हू मेरे साथी, जिनके सङ्ग मुझे कार्य करने में गौरव और प्रसन्नता है, वे इतने उदार हैं कि मेरे दोषों को भी कुछ नहीं समझते हैं, मेरी थोडी सेवाको भी बहुत मानते हैं, तथापि मैं सार्वजनिक जीवन के तूफानी

और अनिश्चित समुद्र पर जाने की ठान रहा हू मुझे अपने हृदय से इस पथ के अनुसरण करने की प्रेरणा हो रही है केवल कर्त्तव्यवश अपने देश की सेवा के लिये ही इस मार्ग का अवलम्बन कर रहा हूं। इस देश में सार्वजनिक जीवन में बहुत कम पुरस्कार है, किन्तु अनेक निराशाएं और कठिनाइया हैं"। वास्तव में देखा जाय तो मिस्टर गोखले का कथन सत्य ही है कि इस देश में सार्वजनिक कार्य्य करनेवालों को बडी बडी कठिनाइयों से सामना करना पडता है, पगपग पर निराशाएं उपस्थित होती हैं बहुत सम्भव है कि महात्मा गोखले को भी अन्य देशसेवको के समान देश के अनेक कार्य्यों में निराश होना पडा हो, परन्तु निराशाओं और कठिनाइयों का सामना करने पर भी वे अन्त समय तक देश सेवा में ही जुटे रहे। उनका सार्वजनिक जीवनके अनिश्चित समुद्र में उतरना अच्छा ही हुआ।

इस व्याख्यान के अन्त में मिस्टर गोखले ने फरग्युसन कालेज के विद्यार्थियों को उक्त सस्था का महत्व बतलाते हुए यह परामर्श दिया था कि यदि जब कभी उनको इस सस्था के कुछ दोष भी प्रतीत हों तो वे उन दोषों के सम्बन्ध में उसी प्रेम से कुछ कहें, जैसे हम अपने माता पिता के सम्बन्ध में कहते हैं"। क्या मिस्टर गोखले के इन शब्दों से उनकी कालेज के प्रति ज्वलन्त भक्ति का दृष्टान्त नहीं मिलता है। इस भक्ति के कारण ही महात्मा गोखले ने फरग्युसन कालेज की अभूत पूर्व सेवा की थी। फरग्युसन कालेज को मिस्टर गोखले ने जो सेवा की थी, उसका उल्लेख पीछे किया जा चुका है, यदि इस सम्बन्ध में उनको Educational Missionary अर्थात्

शिक्षा का प्रचारक कहा जाय तो कुछ भी अत्युक्ति नहीं होगी। यदि महात्मा गोखले ने और कुछ सेवा न की होती तो भी जब तक फरग्युसन कालेज है तब तक भारतवर्ष में कम से कम महाराष्ट्र प्रान्त में उनकी पवित्र स्मृति सदैव रहती। इस समय भारतवर्ष में जितने कालेज हैं, उनमें फरग्युसन कालेज लाहौर का दयानन्द एङ्गलो वैदिक कालेज और काशी का सेन्ट्रल हिन्दू कालेज अपने ढङ्ग के निराले हैं, इन कालिजों के कार्य सञ्चालकों ने शिक्षा प्रचार के निमित्त अपने सब स्वार्थ और महत्वाकांक्षाओं पर लात मारदी है। महात्मा गोखले, महात्मा हंसराज और प्रिन्सपल पराञ्जपे का नाम जब तक भारतवर्ष में शिक्षा का महत्व समझनेवाला एक बच्चा भी जीवित रहेगा। तब तक बड़ी भक्ति और श्रद्धा से उच्चारण करता रहेगा। अभी हमारे देश में शिक्षा की बहुत कमी है। इस समय शिक्षा के प्रचार के लिये अनेक गोखले, बहुत से हंसराज और कितने ही पराञ्जपे की जरूरत है। क्या हमारे देश के नवयुवक वकालत आदि के फेर में न पड़कर महात्मा गोखले के जीवन से इतनी शिक्षा ग्रहण नहीं कर सकते हैं कि अपनी जाति में शिक्षा प्रचार के निमित्त, अपने देश भाइयों में ज्ञान की ज्योति का प्रचार करने के लिये अपने समस्त स्वार्थों पर लात मारदें। जिस दिन हमारे हृदय में यह पवित्र भाव होगा, उस दिन ही भारतमाता के कष्ट दूर होंगे।

कौन्सिल में गोखले

लार्ड कर्जन को इस देश से विदा हुए लगभग दश वर्ष होगये हैं, परन्तु अभी तक भारतवासी उनके शासन को भूले

नहीं हैं। सन् १६०२ में जब लार्ड कर्जन का सितारा बुलन्दी पर था तब बडी राज्य व्यवस्थापक सभा (इम्पीरियल कौंसिल से सर फीरोजशाह मेहता के अलग होने पर माननीय मिस्टर गोपाल कृष्ण गोखले बडी व्यवस्थापक सभा के समासद हुए। सच पूछिये तो सर फीरोजशाह मेहता के अलग होने से इस देश के निवासी जिस हानि की आशङ्का कर रहे थे जिस हानि की सम्भावना समझे हुए थे, कौंसिल में मिस्टर गोखले के पहुचने से वह आशङ्का वह सम्भावना केवल दूरही नहीं हुई प्रत्युत गोखले की कार्य पद्धति से गैर सरकारी मेम्बरों में नवीन भावों (New spirit) का सञ्चार हुआ उन्होंने कौन्सिल के गैर सरकारी मेम्बरों को नवीन मार्ग प्रदर्शित किया यद्यपि गोखले महोदय से बम्बई निवासी भली-भाति परिचित थे, बम्बई प्रान्तिक कौसिल में उनके कार्य का परिचय पा चुके थे, पूना के म्युनिस्पिल बोर्ड के चैयरमैन रहते समय उन्होंने कितने ही ऐसे महत्वपूर्ण कार्य किये थे जिसने बम्बई निवासियों को उनकी योग्यता में किसी प्रकार का सन्देह नहीं होने दिया। तथापि विशाल भारतवर्ष में इस छोर से दूसरे छोर तक देशवासियों ने मिस्टर गोखले का महत्व उनके कौंसिल में पहुचने पर ही समझा। उन्होंने सन् १६०२ में कौंसिल में पहुच कर पहले ही पहल, बजट बहस पर जो वक्तृता दी थी वह बडी विवेचना पूर्ण थी उस वक्तृता की भारतवासियों न ही नहीं अनेक उदार हृदय एङ्गलो इण्डियनों ने भी प्रशसा की थी*

*मिस्टर गोखले की बजटवाली इस वक्तृता ने भारतवासियों के हृदय में नवीन आशा का सञ्चार कर दिया था। स्वर्गीय मिस्टर रमेशचन्द्रदत्त ने

इस बजटवाली वक्तृता में मिस्टर गोखले ने कई बातें बड़े मार्के की कहीथीं। अर्थ सचिव नेबजट की जो बचत दिखलायी, उसको मिस्टर गोखले ने मिथ्या प्रमाणित कर दिखलाया था।

जो आर० सी० दत्त के नाम से विख्यात हैं, बनारस की कांग्रेस में मिस्टर गोखले को सभापति करने के प्रस्ताव का अनुमोदन करते समय कहा था —"थोड़े दिन हुये इन्हीं (मिस्टर गोखले) ने बड़े लाट की कौंसिल में बजट विचार पर चिरस्मरणीय वक्तृता दी थी उसी से उनका नाम राजनीतिज्ञों में हो गया है। सज्जनों ! मुझे मालूम नहीं कि आपलोगोंने इस वक्तृता के सम्बन्ध में क्या विचार किया होगा। किन्तु मैं उस वक्तृता को पढ़तेही सोचने लगा कि ये भारतवर्ष के लिये Coming man है। कौंसिल वाली सुन्दर वक्तृता में मिस्टर गोखले का विचार प्रकट करने का ढङ्ग और तर्क करने की शक्ति तथा प्रकृति प्रमाणों की विशेषता से यही प्रतीत होता है कि आखिर कौंसिल में हमारा भी एक ऐसा शूरवीर है जो अपने देश तथा देशवासियों के प्रति न्याय का अवलम्बन करेगा। लगातार वर्षों से हम ने बड़े लाट की कौंसिल की जो कार्रवाई देखी है यदि उससे में यह शब्द कहूं तो मैं समझता हूं कि मैं आप सब लोगों की जो यहां मौजूद हैं सम्मति प्रकट कर रहा हूं मिस्टर गोखले से बढ़कर कोई भी योग्य और न्याय परायण व्यक्ति हमारे पक्ष का समर्थन करने वाला नहीं है।"

बनारस की कांग्रेस में ही मिस्टर गोखलेको सभापति के लिये धन्यवाद देते हुए कौंसिल की वक्तृता के सम्बन्ध में माननीय प० मदनमोहन मालवीय जी ने कहा —'लार्ड कर्ज़न छोटी उमर में भारत के बड़े लाट होकर आये थे। सौभाग्यवश भारतवर्ष के छोटी अवस्था के राजनीतिज्ञों में बम्बई से बड़े लाट की कौंसिल में एक प्रतिनिधि निर्वाचित हुआ। लार्डकर्ज़न तर्क करने की बड़ी शक्ति रखते थे उन्होंने देखा कि बम्बई से जो सभासद आयाहै वह उनकी टक्कर का है इङ्गलैण्ड ने अपना एक चमत्कारिक बड़ा लाट भेजा, हिन्दुस्तान ने कौंसिल में अपने युवक राजनीतिज्ञों में से एक को भेजा दुर्भाग्यवश इङ्गलेण्ड का निर्वाचन असफल हुआ और हिन्दुस्तान का निर्वाचन सफल हुआ।

यहाँ पर न तो उनकी समस्त बजट सम्बन्धी वक्तृताओं के अनुवाद करने का स्थान है न प्रत्येक वर्ष की बजटवाली वक्तृता का साराश ही दिया जा सकता है परन्तु इतना अवश्य पाठकों की सेवा में निवेदन करना चाहते है कि मिस्टर गोखले की चाहे जिस वर्ष की बजटवाली वक्तृता को उठालीजियेगा, उससे पता लगेगा कि वे प्रतिवर्ष बडे लाट की कौंसिल में अपने देश की उन्नति के लिये गरीब प्रजा पर टैक्स (कर) बहुत न लगाने के लिये बडे निर्भीक होकर अपने विचार प्रकट किया करते थे। उनकी चाहे जिस वर्ष की वक्तृता को उठाकर पढ लीजियेगा तो उससे यही ज्ञात होगा कि भारत सरकार को उन्होंने प्रतिवर्ष इस देश के धन का सदुपयोग करने के लिये बडे बडे अमूल्य परामर्श दिये थे। सरकार सेना का जो व्यय बढ़ा रही थी उसको घटाने के लिये और शिक्षा प्रचार तथा अन्य कार्यों में खर्च करने के लिये उन्होंने प्रतिवर्ष सम्मति दी थी। कहते हैं कि मिस्टर गोखले की सैनिक व्यय के घटाने की प्रबल युक्तिया देखकर भारतवर्ष के भूतपूर्व जङ्गी लाट लार्ड किचिनर को तो यहां तक भय होगया था कि किसी दिन वे सरकार को अपने पक्ष में न करलें।

मिस्टर गोखले की बजटवाली वक्तृताओं में गम्भीर विचार तो होते ही थे पर भाषा भी बडी ओजस्विनी होती थी। वक्तृताओं के अन्त में वे जिस वर्ष देश की जैसी परिस्थिति होती थी उस परिस्थिति को लेकर गवर्नमेण्ट को चेतावनी दिया करते थे। सन् १६०५ से देश में जो नई लहर बहनी आरम्भ हुई तब से मिस्टर गोखले प्राय गवर्नमेण्ट को

भारत के शिक्षित समुदाय के विचारों के अनुसार चलने की सलाह दिया करते थे। उन्होंने कितनी ही बार सरकार की दमननीति का विरोध किया था। सन् १९०८ में उन्होंने अपनी बजटवाली वक्तृता के अन्त में कहा था —"My Lord, the government will no doubt put down, indeed it must put down—all disorder with a firm hand. But what the situation really requires is not the police man's baton or the soldier's bayonet but the stateman's insight wisdom and courage, इसका अर्थ यह है —"माई लार्ड! इसमें सन्देह नहीं गवर्नमेण्ट समस्त अशान्ति को बल से दमन कर देगी। परतु वास्तव में परिस्थिति को दमन करने के लिये पुलिसमैन का डंडा अथवा सिपाही की संगीन दरकार नहीं है लेकिन परिस्थिति को दमन करने के लिये दरकार है तो केवल 'किसी राजनीतिज्ञ की दूरदर्शिता बुद्धि और हिम्मत" इस भांति मिस्टर गोखले ने बजटवाली वक्तृताओं में एक स्थान पर नहीं अनेक स्थानों पर सरकार को समय समय पर देश की स्थिति सुधारने की सम्मति दी थी। और जिसका कभी कभी प्रभाव भी पड़ता था। सन् १९०४ में मिस्टर ब्राडरिक ने जो उस समय भारत सचिव (स्टेट सेक्रेटरी) थे बड़े लाट को गोखले महोदय के कथनानुसार बजट (आय व्यय का अनुमानपत्र) बनाने का परामर्श दिया था। सन् १९०६ में गोखले की वक्तृता ऐसी मार्के की हुई थी कि लोर्डमिन्टो तक को कहना पड़ा था कि पार्लीमेन्ट में भी ऐसी बहुत कम वक्तृताएं होती हैं। सन् १९०२ में जो अर्थ

सचिव सर एडवर्ड वेकर थे, उन्होंने कहा था —"मुझे इससे बढ़कर और कोई इच्छा नहीं है कि मिस्टर गोखले मेरे बाद अर्थ सचिव हों"। सर फ्लीवुड विलसन ने कहा था कि बजट पर विचार बिना गोखले के ऐसा है जैसे शेक्सपीयर का नाटक हेमलेट उसके नायक डेनमार्क के राजकुमार के बिना किया जाय। संयुक्तप्रान्त के छोटे लाट सरजेम्स मेस्टन ने जिन दिनों वे अर्थ सचिव थे मिस्टर गोखले की तुलना इङ्गलैण्ड के प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ स्वर्गीय मिस्टर ग्लेट स्टन से की थी। कहने का सारांश यह है कि मिस्टर गोखले की बजट सम्बन्धी वक्तृताएं ऐसे उच्चभावों से परिपूर्ण होती थीं कि उनसे मतभेद रखनेवाले व्यक्तियों तक को उनकी मुक्तकंठ से प्रशंसा करनी पड़ती थी। यह भारत माता का दुर्भाग्य है कि उसकी योग्य सन्तानों का उचित आदर सत्कार यहाँ होता है, यदि मिस्टर गोखले का जन्म भारतवर्ष में न होकर किसी दूसरे देश में हुआ होता तो वे किसी बहुत ऊंचे पद पर पहुंचते। यदि उनका इंगलैंड में ही जन्म हुआ होता तो बहुत सम्भव है कि वे वहां ग्लैडस्टन के समान प्रधान मंत्री होते पर भारतवर्ष का ऐसा भाग्य कहां?

कौंसिल में दूसरे कार्य

इसमें सन्देह नहीं कि कौंसिल में पहुंच कर मिस्टर गोखले ने सदैव प्रजामत का पक्ष लिया था। लार्ड कर्जन बिना किसी दूरदर्शिता का विचार करके बहुत सी ऐसी बात कर गये थे जिससे देश की काया ही पलट गई। उन्होंने

जिस समय सन् १६०३ में आफिशियल सीक्रेट एक्ट बनाया था उस समय मिस्टर गोखले ने अनेक प्रबल युक्तियों द्वारा इस बिलका घोर प्रतिवाद किया था। लार्डकर्जन ने इस बिल को इसलिये बनाया था कि सरकारकी गोपनीय बातें प्रकट न होने पावें। इस बिलके केवल हिन्दुस्तानी अखबार ही नहीं, बल्कि एङ्गलोइण्डियन अखबार तक विरोधी थे। प्रजामत का सदैव से निरादर करनेवाले "इङ्गलिशमैन" तक ने आफिशियल सीक्रेट एक्ट का प्रतिवाद किया था। पर लार्ड कर्जन ने किसी की नहीं सुनी। मिस्टर गोखले न कौंसिल में इस एक्ट के प्रतिवाद में बड़ी जबरदस्त वक्तृता दी थी। इस एक्ट के बन जाने के पश्चात् मिस्टर गोखलेको भारत सरकार ने सी० आई० ई० की उपाधि प्रधान की थी। कहते हैं लार्ड कर्जन ने स्वय मिस्टर गोखले को सी० आई० की उपाधि देते समय बधाई की चिट्ठी लिखी थी। इस देश में अनेक व्यक्ति उपाधियों के लिये उत्सुक रहते हैं जैसे चातक स्वाति की बूंद के लिये तड़पा करता है, वैसे ह। वे सी० आई० ई० और राय बहादुरी आदि के लिये भटकते रहते हैं। हमारे देश के अनेक व्यक्ति इन उपाधियों की प्राप्ति के लिये उचित अनुचित सभी उपायों का अवलम्बन करते हैं। परन्तु तब भी उन विचारों के नसीब में उपाधिया नहीं होती हैं। एक मिस्टर गोखले थे, जिनको बिना किसी प्रयास के उपाधि मिली थी। "आफिशियल सीक्रेट एक्ट" के विपक्ष में सम्मति देने के बाद मिस्टर गोखले को जब यह उपाधि मिली तो साधारण मनुष्य यही समझने लगे कि "आफिशियल सीक्रेट एक्ट" की प्रतिवादवाली वक्तृता की योग्यता को देखकर ही सरकार ने उन्हें सी० आई० ई० की उपाधि प्रदान की है।

आफिशियल सीक्रेट एक्ट के अलावे उन्होंने समय समय पर भारतीय प्रजा का अच्छा पक्ष लिया था जब लार्ड कर्जन "इण्डियन यूनिवर्सिटीज एक्ट" बनाकर इस देश की उच्च शिक्षा को मटियामेट करने को उतारू हुये थे तब मिस्टर गोखले ने इस बिल का प्रबल प्रतिवाद किया था । इस भांति उन्होंने समय समय पर भारतवासियों का पक्ष लेकर स्वर्गीय मिस्टर आर० सी० दत्त के इन शब्दों को चरितार्थ कर दिया था— "आखिरकार हमारा भी एक शूरवीर बडी व्यवस्थापक सभा में है, जो अपने देशवासियों और देश के प्रति न्याय को ग्रहण करेगा"। जब सन् १९०७ में लार्ड मिन्टो ने शिमला शैल पर सभाओं के दमन करने का जो कानून पास किया था उसका उन्होंने बडे जोरदार शब्दों में खण्डन किया था उन्होंने अपनी उस वक्तृता के प्रारम्भ में बतलाया था कि इस प्रकार के कानूनों पर बडी व्यवस्थापक सभा का जो अधिवेशन कलकत्ता में हो उस में विचार करना चाहिये । शिमला में इस ढङ्ग के कानून नहीं पास करने चाहिये ।

चाहे गोखले महोदय की कौंसिल की वक्तृताएँ पढ लीजिये चाहे सर्वसाधारण में समय समय पर उनकी जो वक्तृता हुई हैं उन्हें पढ़ लीजिये, उनसे यही पता लगता है कि गोखले अपनी वक्तृताओं में संयम रूपसे भाषा का व्यवहार करते थे । यह तो उनका खास तौर से नियम था कि वक्तृताओं में अनावश्यक शब्दों को नहीं आने देते थे । परसाथ ही उनकी भाषा भी ऐसी होती थी जिस में किसी के प्रति कटु शब्द न हों, चाहे भाषा बहुत जोशीली न हो पर प्रभावशालिनी अवश्य हो मिस्टर गोखले की वक्तताओं से यही ज्ञात होता है कि वे मनु के

इस सिद्धान्तको माननेवाले थे कि सत्य हो पर कटु न हो। अप्रिय शब्दों से किसीका जी न दु खाया जाय पर साथही वे किसीसे सच्ची बात कहने से रुकते भी नहीं थे। वे निडर होकर बिना किसी सङ्कोच के सत्य बात प्रकट करते थे। उन्होंने सभाओं की रुकावटवाले कानून के प्रतिवाद में अपने विचार निर्भीक होकर प्रकट किये थे। उनकी युक्तियां बडी प्रबल होती थीं। सरकारी मेम्बर आनरेबुल सर हर्वे एडमसन ने सभाओं को रोकनेवाले बिलको उपस्थित करते समय कहा था—"माडरेट (नरमदल) एक्सट्रीमिष्ट (गरमदल) के सिद्धान्तों से समस्त भेद रखने पर भी उनको रोकने की चेष्टा नहीं करता। इसका मु ह तोड उत्तर मिस्टर गोखले ने वहीं पर यह दिया'—"एङ्गलो इण्डियन अखबार सदेव शिक्षित हिन्दुस्तानियों के प्रति बुरे भाव प्रकट किया करते हैं पूर्ण विश्वास है कि आनरेबुल मेम्बर तथा अन्य सरकारी मेम्बर एङ्गलो इण्डियन अखबारों के कथन से सहमत नहीं हैं तथापि वे उनकी निन्दा नहीं करते हैं"। एक स्थल पर उन्होंने अपनी वक्तृता में कहा था—" यह सच है कि देश में अशान्ति फैल रही है, परन्तु क्या सरकार समझती है कि ऐसे कठोर उपायों से अशान्ति दब जायगी ? नहीं वह कभी नहीं दब सकती ऐसे कठोर उपायों से उसको और भी उत्तेजना मिलेगी। गवर्नमेंटसे वैरभाव कहीं भी नही है जहा कहीं असन्तोष है, उसका कारण प्रत्यक्ष हे। यदि गवर्नमेंट चाहे तो उसको सहज में ही मिटा सकती है। हिन्दुस्तान के लोग हृदय से राजभक्त हैं। यह बात लार्ड कर्जन ने आज से पाच वर्ष पहिले दिल्ली दरबार में स्पष्ट कही थी,, ।

मिस्टर गोखले ने कौंसिल में पहुंच कर हिन्दुस्तानी प्रजा की भलाई की जो चेष्टाएं की थीं, उन सबका वर्णन इस छोटी पुस्तिका में हो नहीं सकता है। उनका लक्ष्य यही रहा कि गरीब भारत की प्रजा पर अन्याय न होने पावे। किन्तु मनुष्य की बुद्धि भ्रमात्मक होती है संसार में ऐसा कोई मनुष्य नहीं है जिससे भूल न होती हो, सन् १९१० में जब नवीन प्रेस एक्ट बना तब मिस्टर गोखले से भी भूल होगई उन्होंने उस एक्ट का अनुमोदन किया। कारण उसका यह था कि मराठी भाषा के कुछ अखबारोंने *मिस्टर गोखले पर व्यक्तिगत इतने भद्दे और कड़े आक्षेप किये थे कि वे उस भ्रम में पड़ गये और उन्होंने उस एक्ट का अनुमोदन करही दिया पर इस एक्ट के अनुमोदन करने से भी उन के चरित्र का यह महत्व प्रकट होता है कि भूल हो जाने पर वे इतने हठी नहीं थे कि अपनी भूल स्वीकार नहीं करते। वे इतने सरल हृदय थे कि जब उनको यह पता लगा कि प्रेस एक्ट से प्रजा के दुखों के दूर करने में किस तरह की रुकावटें आरही हैं, तब उन्होंने उस एक्ट को रद्द कराने में भरसक यत्न किया पर वे सफल मनोरथ न हुए। इसमें सन्देह नहीं जब कभी यह नवीन प्रेस एक्ट रद्द होगा तब मिस्टर गोखले की आत्मा को स्वर्ग में शान्ति मिलेगी।

मिस्टर गोखले का हृदय दीन दुखियों के प्रति कठोर बर्ताव को देखकर पिघल जाता था। जब उन्होंने देखा कि भारतवर्ष के मजदूरों को विदेशों में किस भांति कष्ट मिलता

* नवीन प्रेस एक्ट के प्रतिवाद में माननीय श्रीयुत प० मदनमोहन मालवीय जीकी बड़ी ओजस्विनी वक्तृता हुई थी।

हैं तब उन्होंने बड़े लाट की कौंसिल में यह प्रस्ताव उपस्थित किया कि विदेशों में यहां से मजदूर न भेजे जावें। दक्षिण अफरीका में भारतवासियों को जो काले रङ्ग के कारण बुरे भाव से देखा जाता था, उसको दूर करने के लिये मिस्टर गोखले ने बड़ा भारी प्रयत्न किया था, जिसके विषय में हम आगे लिखेंगे पर उन्होंने कौंसिल में उसकी चर्चा छेड़ कर बड़े लाट लार्ड हार्डिङ्ग तक को अपने पक्ष में कर लिया था यदि वे कुछ दिन और जीवित रहते तो दक्षिण अफ्रीका के प्रवासी भारतवासियों के दुख को सदैव के लिये मिटा जाते।

मिस्टर गोखले की प्रबल इच्छा थी कि भारतवर्ष का बच्चा बच्चा शिक्षा प्राप्त करे। यह हम पहले कह आए हैं कि बड़े लाट की कौंसिल में बजट सम्बन्धी उनकी जो वक्तृताएं होती थीं उनमें सेनादि के अनावश्यक व्ययों को घटा कर शिक्षादि प्रजा के उपयोगी कामों में ख़र्च करने की सलाह दिया करते थे। पर वे इससे ही सन्तुष्ट नहीं हुए, उन्होंने सन् १९११ में बड़े लाट की कौंसिल में मुफ़्त और अनिवार्य शिक्षा के लिये बिल उपस्थित किया था। जिसमें उन्होंने अकाट्य युक्तियों से यह सिद्ध कर दिखाया था कि भारतवर्ष में प्राथमिक शिक्षा का मुफ़्त अनिवार्य होना अत्यन्त आवश्यक है। शोक है मिस्टर गोखले का यह बिल पास नहीं हो सका यदि उनका यह बिल पास हो जाता तो देश के बच्चों को प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने में कोई अड़चन प्रतीत न होती। हमारे देश में अज्ञानता का प्रचण्ड राज्य है, ऐसे मनुष्यों की कमी नहीं है जो अपने बालकों को शिक्षा देना अपना कर्त्तव्य नहीं समझते हैं। साथ ही इस देश में इतन

दरिद्रता भी बढ़ी हुई है कि अनेक व्यक्ति धनाभाव के कारण अपने बच्चों को शिक्षा नहीं दे सकते हैं। यदि मिस्टर गोखले का शिक्षा बिल पास हो जाता तो इस देश की एक बड़ी आवश्यकता की पूर्त्ति होती। पर इस देश का ऐसा भाग्य कहां जिससे मिस्टर गोखले के प्रारम्भिक शिक्षा सम्बन्धी विचार व्यवहार में परिणित होते। मिस्टर गोखले के सामने इस बात की आशा अवश्य थी कि वे एक न एक दिन कौंसिल में इस बिल को पास कराके छोड़ेंगे पर गोखले महोदय के विलीन होजाने से यह आशा भी निराशा में परिणित होगई देखना चाहिये किस दिन यह बिल पास होता है।

मदरास में भ्रमण

विद्यार्थियों को सन्देश

यह पहले कह चुके हैं कि मिस्टर गोखले कांग्रेस में बहुत दिनों से शामिल होगये थे। जब पूना में कांग्रेस हुई थी तब वे स्वागतकारिणी सभा के मन्त्री भी हुये थे सन् १९०३ में वे आल इण्डिया कांग्रेस समस्त-भारतवर्षीय महासभा के संयुक्त मन्त्री हुये। सन् १९०४ में उन्हें कांग्रेस के संयुक्त मन्त्री होने की हैसियत से मदरास में कितने ही स्थानों में जाना पड़ा। मदरासियों ने मिस्टर गोखले का बड़े ठाट बाट से स्वागत किया। अनेक स्थानों में विद्यार्थियों ने उन्हें अभिनन्दन पत्र समर्पण किये। मदरास के समाचार पत्रों ने जिनमें बहुत से एङ्गलो इण्डियन समाचार पत्र भी थे उनका जीवनचरित और व्याख्यान छापे। वहां की अनेक

सार्वजनिक सस्थाओं में उनके व्याख्यान हुये। सन् १६०४ की २८ वीं जुलाई को मदरास के पचप्पा कालेज के विद्यार्थियों ने उनको एक अभिनन्दनपत्र समर्पित किया था जिसके उत्तर में मिस्टर गोखले न वहां के विद्यार्थियों को कई उपयोगी कार्य करने की सलाह दी थी। पहली बात उन्होंने विद्यार्थियों से यह कही थी कि विद्यार्थी को स्मरण रखना चाहिये कि कालेज के छोडने के बाद ही उनकी शिक्षा समाप्त न हो जाय पर उन्हें सदैव कालेज छोडने के पीछे भी ज्ञान प्राप्ति के लिये अध्ययन करते रहना चाहिये। इसके आगे उन्होंने विद्यार्थियों को सर्व साधारण masses की स्थिति सुधारने के लिये परामर्श दिया था। फिर उन्होंने विद्यार्थियों को इस देश की स्त्रियों के दुःख दूर करने की सलाह देते हुये कहा कि समस्त स्त्री जाति एक मनुष्य के लिय जो ज्ञान पूर्ण जीवन की आवश्यकता है, उस से वञ्चित रक्खी गई है, यह किसी देश के लिये अच्छा नहीं है। धर्म सम्बन्धी बहुत सी पुरानी सस्थाए भी केवल आकार में ही दिखलाई पडती है पर उनके विचार काफ़ूर होगये हैं तुम को जान लेना चाहिये कि तुम्हारे करने के लिये इस ओर भी बहुत से कार्य हैं इसके अतिरिक्त समस्त देश राजनैतिक परिस्थिति के विचार से भी अच्छी दशा में नहीं है। इसका तात्पर्य यह है कि जो लोग राजनैतिक समस्या में कुछ अनुराग रखते हैं, उन्हे बडा काम करना है देश की औद्योगिक उन्नति की ओर भी ध्यान देना चाहिये मिस्टर गोखले ने मदरास के विद्यार्थियों को जो सन्देश दिया था, वह भारतवर्ष के प्रत्येक विद्यार्थी के लिये है। क्या हमारे विद्यार्थी महात्मा

गोखले के इस सन्देश के अनुसार कार्य करने की चेष्टा करेंगे।

गत वर्ष ही मिस्टर गोखले ने २४ वीं जुलाई को मलयापुर के साऊथ इण्डियन एसोसियेशन में अपने गुरु स्वर्गीय महादेव गोविन्द रानाडे के स्मारक में रानाडे पुस्तकालय खोला था।

विलायत में आन्दोलन

सन् १९०४ में बम्बई में इण्डियन नेशनल कांग्रेस का बड़ा शानदार अधिवेशन हुआ था। प्रसिद्ध भारत हितैषी सर हैनरी काटन सभापति थे। कांग्रेस के उस अधिवेशन में निश्चय हुआ कि भारतवासियों का एक डेपूटेशन इंगलैंड जाकर वहांवालों को यहां की स्थिति समझावे। बस इस निश्चय के अनुसार श्रीयुत गोखले और लाला लाजपतराय सन् १९०५ में इंगलैंड गये थे। उन दिनों इंगलैंड में भी पार्लीमेन्ट के एलेक्शन (निर्वाचन) की धूम मची हुई थी। मिस्टर गोखले को राजनैतिक आन्दोलन के लिये विशेष परिश्रम करना पड़ता था। उन्होंने पचास दिन के भीतर पैंतालीस व्याख्यान दिये थे इसके अतिरिक्त अखबारों में लेख लिखने अखबारों के संवाददाताओं के मिलने पर उनके प्रश्नों के उत्तर देने तथा पार्लीमेन्ट के मेम्बरों से मिलकर भारत के दुःख की कथा कहने आदि के बहुत से कार्य किये थे। इन सब कार्यों में लगातार परिश्रम करने से उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया था। उनके गले में बीमारी होगई थी और वह बीमारी यहां तक बढ़गई थी कि भारतवर्ष को लौटते समय जहाज पर ही गले में अस्त्र प्रयोग (ओपेरेशन) कराना पड़ा था। उसी वर्ष लार्ड कर्जन

की अदूरदर्शिता के कारण बङ्गविच्छेद होने से बङ्गाल में नई लहर उठने लगी थी। मिस्टर गोखले ने विलायतवालों का बङ्गविच्छेद के कुफल की ओर ध्यान आकर्षण किया था उन्होंने मेनचेस्टर में ६ वीं अक्टूबर सन् १८०५ को भारतवर्ष में असन्तोष नामक एक वक्तृता दी थी। जिसमें उन्होंने विलायतवालों को समझाया था कि जैसा आप अपने यहांकी पार्लिमेन्ट के मेम्बरों का चुनाव करेंगे वैसा ही भारतवर्ष के शासन पर प्रभाव पडेगा। उस समय उनके प्रबल युक्तियों के देने पर भी सरकार का ध्यान "भारतवर्ष के असन्तोष" की ओर नहीं हुआ किन्तु वहाँ की जनता में इसकी विशेष चर्चा होने लगी और इसमें मिस्टर गोखले को किञ्चित् सफलता भी प्राप्त हुई थी।

भारतवर्ष को लौटना

सात समुद्र और तेरह नदी पार इङ्गलेण्डमें अपनी भारत माता के क्लेशों की चर्चा करके मिस्टर गोखले भारतवर्ष को लौटे। बम्बई और पूना में उनका बडी धूम धाम से स्वागत हुआ। उनको बधाई देने के लिये कितने ही स्थानों में सभाए हुई। लोकमान्य तिलक महोदय भी इन सभाओंमें सम्मिलित हुए थे और उन्होंने भी विलायत में इस ढङ्ग के आन्दोलन को उपयुक्त समझा था। इसी वर्ष मिस्टर गोखले "इण्डियन नेशनल कांग्रेस" के सभापति निर्वाचित हुए। सभापति निर्वाचित होने के कारण, अपनी वक्तृता में बङ्गाल की वास्तविक और यथार्थ परिस्थिति प्रदर्शित करने के लिये, उनको दो एक रोज के लिये, कलकत्ता भी जाना पड़ा था। यदि और

कोई सभापति होता तो सम्भव है कि बङ्गाल की परिस्थिति बिना देखे भाले ही, अखबारों के आधार पर अपनी वक्तृता में चर्चा कर देता। परन्तु नहीं मिस्टर गोखले ने स्वयं बङ्गाल की परिस्थिति देखना उचित समझा।

कांग्रेस के सभापति

सन् १६०५ में इण्डियन नेशनल कांग्रेस का अधिवेशन हिन्दुओं के परम पवित्र तीर्थ विश्वनाथ पुरी (काशी जी) में हुआ था। उसके सभापति मिस्टर गोखले हुए। सच पूछिये तो कांग्रेसवालों ने मिस्टर गोखले को सभापति करके उनके गौरव की विशेष वृद्धि नहीं की किन्तु कांग्रेस को सम्मानित किया। बेचारे भारतवासियों के हाथ में अपने देश के गोखले जैसे महानुभावों को सभापति करनेके अतिरिक्त सम्मानित करने का और कोई उपाय नहीं था। सन् १६०५ में जब इस देश की भयङ्कर परिस्थिति थी लार्ड कर्जनकी अदूरदर्शिता के कारण समस्त देश में असन्तोष फैला हुआ था। बहुत से शिक्षित भारतवासियों के हृदय में नवीन विचार और नवीन आकांक्षाएं स्फुरित हो रही थीं। तब गोखले जैसे प्राकृत-नेता की ही आवश्यकता थी, जो दमन नीति आदि वायु के प्रबल झकोरे और असन्तोष रूपी समुद्र की उत्ताल तरङ्गों से राष्ट्रीय नौका की रक्षा करने में समर्थ हुए थे। उन्होंने सभापति की हैसियत से जो व्याख्यान दिया था वह बड़ा सारगर्भित और ओजस्विनी भाषा में था। व्याख्यान के आरम्भमेंयुवराज और युवराज्ञी (वर्तमान सम्राट और सम्राज्ञी) के स्वागत में कुछ निवेदन करके और तत्कालीन बड़े लाट और लाटिनी

मिन्टो को बधाई देते हुए लार्डकर्जन की औरङ्गजेबसे तुलना की थी। उन्होंने अपनी वक्तृता में कहा था.—"सज्जनो! यह सच है कि सभी बातोंका अन्त होता है। लार्डकर्जनकी लाट-गिरी का भी अन्त आया। गत सात वर्षसे हम उस विलक्षण मूर्ति को देख देखकर चकित होते थे। कभी व्याकुल होते थे, कभी क्रोध के मारे जल उठते थे। कभी दुःख से तड़फड़ाने लगते थे। यहा तक अब अनुमान करना भी कठिन होगया है कि वास्तव में हम उक्त मूर्त्ति से पार पागये हैं या नहीं" इसके आगे लार्ड कर्जन ने भारतवर्ष से चलते समय बम्बई की बायकुला क्लबमें जो वक्तृता दी थी उसकी आलोचना करते हुए उन्होंने कहा.-"उन्होंने (लार्डकर्जन) ने बायकुला क्लब वाली अपनी वक्तृता में कहा है कि भारतवर्ष में प्रति सैकड़ा अस्सी मनुष्य अशिक्षित हैं तथा उन्हीं के लिये अङ्गरेजो को भारतवर्ष में परिश्रम करने की आवश्यकता है। व लार्ड कर्जन) बाकी मनुष्यों के अर्थात् शिक्षित मनुष्यों के मत कुछ समझते ही नहीं। मि० ग्लेडस्टन कहा करते थे कि स्वाधीनता मनुष्य को उन्नति की चोटी पर पहुंचा देती है। किन्तु लार्डकर्जन इस बात को नहीं मानते थे। सर्वसाधारण की महत्त्वाकांक्षा से उनकी सहानुभूति नहीं थी। पराधीन जाति में महत्वाकांक्षा के चिन्ह देखकर वे बेतरह बिगड़ते थे और उसे दमन करना चाहते थे। शायद इसी कारण उन्होंने बायकुला क्लब में कहा था -"भारतवर्ष की भलाई के लिये ही मैंने भारतवासियों को किसी प्रकार का राजनैतिक अधिकार नहीं दिया था"। बायकुला क्लब वाली वक्तृता में लार्डकर्जन ने शिक्षित तथा अशिक्षित मनुष्यों के स्वार्थ

जुदे जुदे बतलाये हैं। जो व्यक्ति प्रजा के स्वार्थों की आशा को जड़ मूल से खोदना चाहते हैं उनके लिये इस प्रकार के दो सम्प्रदायों के स्वार्थों को अलग करना ठीक है। जब लार्ड कर्जन ने देखा कि भारतवर्ष के शिक्षित मनुष्य उन पर बिगड़े हैं तब उन्होंने अशिक्षितों का आश्रय ग्रहण किया। लार्ड कर्जन कह गये हैं कि अशिक्षितों के हित के लिये ही मैंने लगान घटाया है और प्राथमिक शिक्षा तथा नहर खुदवाने के लिये सरकारी खजाने से रुपया देना स्वीकार किया है। उनकी ऐसी बातों से यह प्रतीत होता है कि शिक्षित मनुष्य इस कार्य को करने में गवर्नमेंट को रोकते थे, अथवा परवाह नहीं करते थे। किन्तु सभी को मालूम है कि इण्डियन नेशनल कांग्रेस इन विषयों में बहुत दिनों से उन्नति के लिये प्रार्थना कर रही है। चार वर्ष पहले जब सरकारी खजाने में ७ करोड़ रुपया बचा था, उस समय मैंने व्यवस्थापक सभा में लगान घटाने की प्रार्थना की थी। परन्तु उस समय लार्ड कर्जन ने कहा था कि दरिद्र प्रजा को बहुत माल गुजारी देनी नहीं पड़ती, पर उन्हीं लार्ड कर्जन ने विदा होने के समय यह डींग मारी है कि मैंने दरिद्रों के उपकार के लिये नमक का लगान घटा दिया है"। इस भांति मिस्टर गोखले ने अनेक विषयों की आलोचना की थी। बङ्गविच्छेद का भी प्रबलविरोध किया था, उस समय जो स्वदेशी आन्दोलन होरहा था उस का समर्थन किया। आगे उन्होंने कौंसिलों का सुधार, स्टेट सेक्रेटरी की कौंसिल में तीन हिन्दुस्तानी सभासदों का होना हिन्दुस्तान के समस्त जिलों में एडवाइजरी बोर्डों का स्थापन करना जिसका उद्देश्य यह हो कि जिलों के प्रधान सर्वसाधा-

रण से सम्बन्ध रखनेवाले कार्यो के करने के पूर्व सर्वसाधारण से सलाह ले लिया करें । विचार और शासन विभाग का अलग करना सेना का व्यय घटाना, प्रारम्भिक शिक्षा का विस्तार करना, शिल्प तथा औद्योगिक शिक्षा को उत्तेजना देना आदि आवश्यक विषयों की ओर गवर्नमेंट तथा सर्व साधारण का ध्यान आकर्षण किया था। सर्वसाधारण ने मिस्टर गोखले की इस वक्तृता को बहुत पसन्द किया था।

भारत सेवक समिति

इण्डियन नेशनल कांग्रेस के सभापति होने से पूर्व उसी वर्ष सन् १९०५ में १२ जून को मिस्टर गोखलेने भारत सेवक समिति (The servants of India Society) स्थापित की थी। हमारे देश में सस्थाओं की कमी नहीं हैं, बहुत सी सस्थाए है पर यह सस्था अनूठी है। प्रतीत होता है कि मिस्टर गोखले का 'भारत सेवक समिति" की स्थापना से उद्देश्य यह था कि इस मृतप्राय देश के निवासियों के हृदय में देश सेवा का भाव वैसा ही प्रबल होजाय जैसे एक ईसाई पादरी को अफरीका के जगलों में अपने धर्मप्रचार का भूत सवार होजाता है। भारत सेवक समिति इसी उद्देश्य से स्थापित हुई हे कि वह कुछ ऐसे व्यक्तियों को तय्यार करे जो धार्मिकभाव से प्रेरित होकर, भारतमाता की सेवा के लिये, अपना जीवन अर्पण करें और नियमबद्ध उपायों का अवलम्बन करके भारतवासियों की राष्ट्रीयता की जागृति में सहायता पहुचावे । और इसमें मिस्टर गोखले को अच्छी सफलता भी प्राप्त हुई थी, भारतवर्ष के भिन्न भिन्न प्रान्तों से

अङ्गरेजी की उच्च शिक्षा प्राप्त अनेक सज्जनों ने अपने स्वार्थ को लात मारकर इसमें योग दिया है।

इस समिति के सदस्यों को मुख्यत पांच बातों की चेष्टा करनी होती है —

(१) अपने वचन और व्यावहारिक दृष्टान्त द्वारा सर्व साधारण में मातृभूमि के प्रति प्रेम उत्पन्न करना और उसकी पूर्ति, त्याग और सेवा से करना।

(२) राजनैतिक शिक्षा और आन्दोलन के कार्य्यों का सगठन करना और देश के लोकमत को प्रबल बनाना।

(३) भिन्न भिन्न जातियों में प्रेम और सहयोग बढाना।

(४) शिक्षा कार्य्यों को विशेषत स्त्रियों की शिक्षा पिछड़ी हुई जातियों की शिक्षा वैज्ञानिक और औद्योगिक शिक्षा के आन्दोलनों को सहायता करना।

(५) अछूत जातियों को उठाना।

समिति में प्रवेश होते समय प्रत्येक सभासद को नीचे लिखी हुई सात प्रतिज्ञाए शपथ पूर्वक करनी पडती हैं —

(१) उसके हृदय में प्रथम स्थान देश का होगा। और अपना सर्वस्व त्याग कर उसकी सेवा करेगा।

(२) देश सेवा करने में वह अपने व्यक्ति लाभ की चेष्टा नहीं करेगा।

(३) बिना किसी जाति अथवा धर्म के वह समस्त भारत वासियों को अपना भाई समझेगा और सब की भलाई के लिये काम करेगा।

(४) समिति उसको तथा उसके परिवार के निर्वाह योग्य जो वृत्ति दे सकेगी, वह उसी से सन्तुष्ट रहेगा वह

अपनी शक्ति का कुछ भी भाग धनोपार्जन करने में व्यतीत नहीं करेगा।

(५) वह अपना पवित्र जीवन व्यतीत करेगा।

(६) वह किसी से व्यक्तिगत झगड़ा नहीं करेगा।

(७) वह समिति के उद्देश्यों पर सदा दृष्टि रक्खेगा और यथाशक्ति उसके कार्य की वृद्धि करेगा। समिति के उद्देश्यों के विरुद्ध वह कभी कोई कार्य नहीं करेगा।

दो प्रकार के सभासद

इस समिति के दो प्रकार के सभासद होते हैं। (१) साधारण सदस्य और (२) शिक्षार्थी सभासद (Members under training)। समितिके प्रधान स्वयं मिस्टर गोखले थे वे "प्रथमसदस्य" कहलाते थे, प्रधान को अन्य सभासदों से कुछ विशेष अधिकार प्राप्त होते हैं। प्रत्येक सदस्य को प्रवेश के समय से ५ वर्ष पर्यन्त समिति में रहकर विशेष शिक्षा प्राप्त करनी होती है। अर्थात् ५ वर्ष तक वे ऐसे विषयों को अध्ययन और मनन करते हैं कि जिनसे उन्हें अपनी दश दशा तथा देशवासियों की स्थिति का पूरा ज्ञान होजाय। इस नियम से एक बड़ा भारी लाभ यह है कि भारत सेवक समिति के सदस्यों को अपने देश की दशा से पूरी जानकारी होजाती है।

शिक्षार्थी सभासद को अपनी शिक्षा के समय में प्रथम सभासद की देख रेख और अभिभावकता में रहना पड़ता है उसको प्रथम सभासद के निर्दिष्ट (बतलाये हुये) विषयों का मनन तथा कार्य्यों को करना पड़ता है। कार्य्य और अध्ययन की इस ढङ्ग से व्यवस्था की जाती है कि पांच वर्ष में

शिक्षार्थी सभासद को भारतवर्ष के भिन्न भिन्न भागों के निरीक्षण करने में व्यतीत करने पड़ते हैं और शेष तीन वर्ष वह समिति के आश्रम में शिक्षा ग्रहण करता है।

साधारण सभासद को भी जिसने पांच वर्ष का अपना अध्ययन समाप्त कर लिया है, प्रथम सभासद के बतलाये हुए समिति के विशेष कार्य के लिये भारतवर्ष के किसी स्थान में जाना पड़ता है। प्रथम सभासद और कौन्सिल जो कुछ आज्ञा और आदेश उसे कर देते है, उसको उन्हीं के अनुसार चलना पड़ता है। तात्पर्य यह है कि इस संस्था के सभासदों को नियमों का पालन करना खूब सिखाया जाता है वे स्वेच्छाचारी नहीं होते है। भारतवर्ष की अनेक सार्वजनिक संस्थाओं के मटियामेट होजाने का कारण यह भी है कि उनमें नियमों को पैर तले रौंद कर लोग अपनी धान्धली मचाया करते है परन्तु भारत सेवक समिति में सभासदों को नियमों की रक्षा करना खास तौर पर सिखलाया जाता है।

समिति के सभासदों को स्वार्थत्याग पूरा करना पड़ता है समिति में जो सभासद शिक्षा पाते है, उनके परिवार की सहायता के लिये केवल तीस रुपये मासिक और साधारण सदस्यों को ५० रुपये मासिक वृत्ति मिलती है। इसके अतिरिक्त समिति में कुछ "स्थायी सहकारी" भी होते हैं, जो समिति को योग्यता पूर्वक सहायता देने के लिये वतन पर रखलिये जाते है। ये सहकारी तीन वर्ष तक काम करने के बाद विशेष योग्य समझे जाने पर समिति के सदस्य भी हो सकते है।

समिति का प्रधान कार्यालय पूना में है वहां पर इसका

विशाल भवन बना हुआ है, २३ एकड भूमि उसके आधीन है लगभग एक लाख की उसकी सम्पत्ति है। "ज्ञान प्रकाश नामक मराठी दैनिक पत्र, प्रेस और 'बम्बई प्रेस, भी समिति की सम्पत्ति है। पूना के अतिरिक्त संयुक्त प्रान्त मदरास, मध्य प्रान्तादि में भी इसकी कई शाखाएं हैं सब से अधिक सदस्य बम्बई की शाखा सभा मे हैं और सब से कम मध्यप्रदेश की शाखा के है। मध्यप्रदेश की शाखा सभा से "हितवाद" नामक अङ्गरेजी का साप्ताहिक पत्र निकलता है। संयुक्त प्रान्त की शाखा सभा ने बङ्गाल की बाढ़ तथा गतवर्ष में हरद्वार के कुम्भ के मेले पर बहुत अच्छा कार्य किया है। लखनऊ का प्रसिद्ध उर्दू पत्र-"हिन्दुस्तानी" जिसके स्वामी-स्वर्गीय बाबू गङ्गा प्रसाद बर्मा थे संयुक प्रान्त की शाखा सभा क आधीन है

बम्बई की शाखा सभा गुजरात अहमदनगर और संयुक्त प्रान्त के अकालों क समय लोकोपयोगी कार्य कर चुकी है। बम्बई की शाखा ने कई सहयोग समितियाँ, मेहतरों के ऋण निवारणार्थ, कुलियों को सहायक समिति आदि खोली है। "सोशल सर्विस लीग" भी बम्बई की शाखा सभा के आधीन है-' सोशल सर्विस लीग" ने रात्रि पाठशाला, गश्ती पुस्तकालय, होलिका सम्मेलन आदि अनेक लोकोपयोगी कार्य किये है लीग में दो सौ स्वय सेवक है।

मदरास की शाखा सभा के प्रधान माननीय मि० श्री निवास शास्त्री है जो वहा की प्रान्तिक कौंसिल के सभासद हैं और उक्त शास्त्री महोदय ही मिस्टर गोखले के उत्तराधिकारी हुये है।

मिस्टर गोखले आज नहीं हैं पर उनकी भारत सेवक

समिति से इस देश की भलाई की बहुत कुछ आशा है। यहाँ पर यह कह देना भी अप्रासंगिक न होगा कि सदैव हिन्दुस्तान की अच्छी बातों से चिढ़नेवाले सर वालेन्टाइन शिरोल साहब ने गोखले की भारत सेवक समिति की अपनी, पुस्तक "इण्डियन अनरेस्ट" में मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। कर्मवीर गान्धी भी इस समिति के सदस्य होना चाहते थे और वे महात्मा गोखले को अपना गुरू समझते हैं परन्तु कई विषयों में मतभेद होने से यह उचित समझा गया कि पहले वे भारतवर्ष में भ्रमण करके यहां के देश की परिस्थिति समझ लें तब समिति के सदस्य हों। परमात्मा वह दिन दिखलावें कि कर्मवीर गांधी भी इस समिति में सम्मिलित होकर अपनी कर्मवीरता का भारतवासियों में विशेष रूप से परिचय दें। इस समय जब सारा देश मिस्टर गोखले के शोक से विह्वल हो रहा है तब क्या देशवासियों का यह कर्तव्य नहीं है कि वे भारत सेवकसमिति की विशेष रूप से धन की सहायता करें जिससे मिस्टर गोखले की हार्दिक इच्छा इस देश में राष्ट्रीय प्रचार का National Missionaries के उत्पन्न करने की पूर्ण हो।

पुन: विलायत गमन
और
स्वराज्य पर निबन्ध

समाचार पत्रों के पाठकों से अविदित नहीं है कि सन् १९०४ में भारतवर्ष की कैसी भयङ्कर परिस्थिति थी। उन दिनों बङ्गाल में बड़ी हलचल मची हुई थी। एक ओर तो बङ्ग

विच्छेद के कारण बङ्गाली लोग अपने आवेश को रोकने में समर्थ नहीं हुये थे, दूसरी ओर गवर्नमेंट ने भी दमननीति का अवलम्बन करलिया था। इस परस्परकी खेंचातानीका परिणाम बङ्गाल के लिये बहुत बुरा हुआ किसी किसी अदूरदर्शी बङ्गाल के हाकिम को स्वदेशी तक राजद्रोह दीखने लगा सार्वजनिक सभाओं में भी उन्हे राजद्रोह की बू आने लगी उन्हें बङ्गाल में बहुत से भले आदमियों को स्पेशल कान्सटेबिल बनाना पडा था। मिस्टर गोखले का ध्यान भी देश की, विशेषत बङ्गाल की इस परिस्थिति की ओर आकर्षित हुआ और उन्होंने उस वर्ष बजट पर वक्तृता देते हुये गवर्नमेंट को सावधान किया था। जिसका उस समय के बडे लाट लार्डमिन्टो जैसे सज्जनके हृदय पर कुछ भी प्रभाव नहीं हुआ। बजट की वक्तृता देने के पश्चात् मिस्टर गोखले बनारस कांग्रेस के निश्चय के अनुसार फिर विलायतवालों को इस देश की परिस्थिति की ओर ध्यान आकर्षण करने और राजनैतिक आन्दोलन करने के लिये पहुचे। जब मिस्टर गोखले विलायत को जा रहे थे, तब सारे देशकी निगाह बारिसाल की ओर लगी हुई थी कि देखें, वारिसाल में बङ्गाल की प्रान्तिक कान्फरेन्स निर्विघ्न होने पाती है या नहीं। यह आशङ्का निर्मूल नहीं हुई। वहा की लोकल पुलिस ने राह चलते हुये प्रतिनिधियों पर लाठी फटकारी, बाबू सुरेन्द्रनाथ बनर्जी को गिरफ्तार किया और उनपर पाच सो रुपये जुर्माना हुआ जो हाईकोर्ट से खारिज होगया। इङ्गलेण्ड में पहुच कर अनेक सभाओं में व्याख्यान देकर मिस्टर गोखले ने वहावालों का ध्यान इन घटनाओं की ओर आकर्षित किया था। उन्होंने लार्ड (तब मिस्टर)

मोर्ले से कई बार भेंट की थी उस समय भारतसचिव (सेक्रेटरी आफ़ स्टेट) ने बंगाल में दमननीति के कारण जो कुछ असुविधायें थीं उनको दूर कर दिया था जिसके विषय में बहुत से लोगों का विश्वास है कि मिस्टर गोखले ने सरदार भारतसचिव से जो मुलाकात की थी उसी के कारण दमननीति की कुछ कड़ाई कम होगई थी।

इङ्गलैंड में मिस्टर गोखले इतना करके ही चुप नहीं रहे उन्होंने महाशयों को भारतवासियों के उच्च विचार और महत्वाकांक्षाओं का विशेष रूप से परिचय दिया। उन्होंने उसी वर्ष लन्दन ईस्ट इण्डिया एसोसियेशन नामक सभा में स्वराज्य (Self government) नामक एक निबन्ध पढ़ा था, जिसमें उन्होंने पार्लियामेंट के सन् १८३३ ई० चार्टर एक्ट और सन् १८५८ में महारानी विक्टोरिया ने जो घोषणा भारत के सम्बन्ध में की थी उनकी बात उद्धृत कर कई बात उन्होंने गवर्नमेंट के विचारने योग्य कही थी, जो लोग यह समझते हैं कि शिक्षित भारतवासियों का प्रभाव बहुत कम है, और उनकी जातियों और धर्म के बखेड़े के कारण शिक्षित लोगों की बात सर्वसाधारण नहीं मानते इसका मिस्टर गोखले ने खण्डन करते हुये कहा था —*"पहिले तो यह (शिक्षित) लोग अपने समाज में मस्तिष्क का काम देते हैं, अर्थात् ये केवल अपने ही लिये नहीं वरन् अपने अपढ़ जाति भाइयों के लिये भी सोचते हैं। इसके [illegible] के हाथ में, भारतवर्ष के अंग्रेज़ी और [illegible]

*इस वक्तृता के अनुवाद में नागपुर के प्रकाशित
प्रकाशित अखबार से सहायता ली [illegible]

विच्छेद के कारण बङ्गाली लोग अपने आवेश को रोकने में समर्थ नहीं हुये थे, दूसरी ओर गवर्नमेंट ने भी दमननीति का अवलम्बन करलिया था। इस परस्परकी खेंचातानीका परिणाम बङ्गाल के लिये बहुत बुरा हुआ किसी किसी अदूरदर्शी बङ्गाल के हाकिम को स्वदेशी तक राजद्रोह दीखने लगा सार्वजनिक सभाओं में भी उन्हें राजद्रोह की बू आने लगी उन्हे बङ्गाल में बहुत से भले आदमियों को स्पेशल कान्सटेबिल बनाना पडा था। मिस्टर गोखले का ध्यान भी देश की, विशेषत: बङ्गाल की इस परिस्थिति की ओर आकर्षित हुआ और उन्होंने उस वर्ष बजट पर वक्तृता देते हुये गवर्नमेंट को सावधान किया था। जिसका उस समय के बडे लाट लार्डमिन्टो जैसे सज्जनके हृदय पर कुछ भी प्रभाव नहीं हुआ। बजट की वक्तृता देने के पश्चात् मिस्टर गोखले बनारस कांग्रेस के निश्चय के अनुसार फिर विलायतवालों को इस देश की परिस्थिति की ओर ध्यान आकर्षण करने और राजनैतिक आन्दोलन करने के लिये पहुंचे। जब मिस्टर गोखले विलायत को जा रहे थे, तब सारे देशकी निगाह बारिसाल की ओर लगी हुई थी कि देखें, बारिसाल में बङ्गाल की प्रान्तिक कान्फरेन्स निर्विघ्न होने पाती है या नहीं। यह आशङ्का निर्मूल नहीं हुई। वहा की लोकल पुलिस ने राह चलते हुये प्रतिनिधियों पर लाठी फटकारी, बाबू सुरेन्द्रनाथ बनर्जी को गिरफ्तार किया और उनपर पाच सौ रुपये जुर्माना हुआ जो हाईकोर्ट से खारिज होगया। इङ्गलैण्ड में पहुच कर अनेक सभाओं में व्याख्यान देकर मिस्टर गोखले ने वहावालों का ध्यान इन घटनाओं की ओर आकर्षित किया था। उन्होंने लार्ड (तब मिस्टर)

समाचार पत्र हैं देशी समाचार पत्र केवल उन्हीं डेढ करोड "देशी भाषा पढे" लोगों के विचार नहीं गढते हैं, जो वाला वाला उनके अधिकार में है, किन्तु वे और भी कई करोड लोगों के विचारों पर अपना असर डालते ह, जिनके पास वे किसी दूसरी रीति से पहुचते हे उस देश अर्थात् हिन्दुस्तान में जा कुछ साधारण सम्पति है, वह सब पढे लिखे लोगों की ही है। इस बात को रद्द करने के लिये अर्थात् शिक्षित लागों के प्रभाव का नाश करने के लिये अफसर लोग बहुधा उन प्राचीन ऐतिहासिक घरानों के लोगों की ओर आशा पूर्ण दृष्टि से देखते हे, जो राष्ट्र विप्लव के समय अगुआ बने थे, पर साधारण लोगों के मन में उनका अब कुछ भी प्रभाव नहीं है क्यों कि आजकल के शान्तिमय और उन्नति के समय में टूटी फूटी और जङ्ग खाई तलवारें अपनी शक्ति और प्रभुता स्थापित करने के लिये, शिक्षित लोगों के विचारों का सामना नहीं कर सकती। इस तरह पढे लिखे हिन्दुस्तानियों का प्रभाव अपने देशवालों पर बहुत है और वह दिन दिन बढता ही जानेवाला है। रही जाति और धर्म के विभागों की बात, सो ये भी अब उतने तेज नहीं ह, जितने वे कभी पहिले थे। पचास वर्ष की शिक्षा और सौ वर्ष के समान कानून एक समान राज्य शासन, एक समान दुःख और एक समान दुर्बलता का स्वाभाविक फल भारतवर्ष में भी दिखाई दे रहा है। अलीगढ के मुसलमानों का राजनैतिक हलचल की आवश्यकता समझना वर्तमान समय का सार्थक चिन्ह है। ऐसा सम्भव नहीं है कि यदि अलीगढ की कार्य-सूची प्रकाशित की जाय तो वह कांग्रेस की कार्यसूची से किसी

प्रकार जुदी होगी यद्यपि यह नई संस्था कुछ समयतक अपना काम-काज अलग ही चलावे, तो भी वह एक न एक दिन कांग्रेस की बडी संस्था में मिल जानेवाली है।"

जिस दिन मिस्टर गोखले ने मुसलमानों के सम्बन्ध में उपर्युक्त विचार प्रकट किये थे उस दिन किस को खबर थी कि शीघ्र ही उनकी भविष्यत्वाणी सफल होगी। आज हम देखते हैं कि हमारे मुसलमान भाई मिस्टर गोखले के उपर्युक्त विचारों के अनुसार ही राजनैतिक क्षेत्र में अपनी कार्यसूची कांग्रेस के समान ही प्रगट कर रहे हैं। यहां तक कि मुसलिम लीग ने भी अपनी कार्य सूची पलट दी है।

मिस्टर गोखले ने अपने इस निबन्ध में एक स्थान पर कहा है —"यह सत्य है और हम भी स्वीकार करते हैं कि पूर्वी देशों को पश्चिमी पद्धति पर ही बहुत सावधानी के साथ और परीक्षा के तोर पर,अपनी उन्नति के मार्ग में चलना होगा, पर चालीस वर्ष में जापान में जापान ने जो कुछ किया है वह भारत सो वर्ष में अवश्य कर लेता। इन दोनों मामलों में दो सरकारों (अर्थात् जापानी और अंगरेजी सरकारों) की प्रवृत्ति ही भेदका मुख्य कारण है'। लार्डकर्जन ने स्वर्गीया महारानी विक्टोरिया के घोषणापत्र के बडे ही उलट पुलट अर्थ किये थे। मिस्टर गोखले ने इस निबन्ध में लार्डकर्जन के किये हुये घोषणापत्र के अर्थों का तर्क और युक्ति पूर्ण खण्डन किया था। इस निबन्ध में मिस्टर गोखले ने भारतवासियों को जो बडी नौकरियों का द्वार बन्द है उस का भी खण्डन किया था। एक स्थान पर उन्होंने कहा है इस समय केवल कानून का मैदान उस में भी थोडा ही भाग

हम लोगों के लिये खुला है और उसमें हिन्दुस्तानी मान वृक्षकी चोटी तक चढते दिखाई देते हे और यदि हमारे देश वाली प्रधान न्यायाधीश (चीफ जस्टिस) और एडवोकेट जनरल के पदों के योग्य पाये जाते हैं, तो उन्हें आबकारी, अफीम, नमक, चुगी, डाक, तार, पेमाइश, सेना और दूसरे मह-कमों की नौकरी न देना अन्याय है। वर्तमान प्रबन्ध में, भारत का गुरुत्व केन्द्र लन्दन में है। हम इस अस्वाभाविक प्रबध के विरोधी हैं और वडे जोर से यह कहते है कि हिन्दुस्तान में नौकरी करनेवालों को जो परीक्षा देनी होती है, वह केवल लन्दन में न हो, किन्तु वह एक ही समय भारत और इङ्गलिस्तान में होवे। अब हम कलकत्ते के वडे लाट और बम्बई और मदारस के छोटे लाटों की प्रबन्ध कारिणी सभाओं (executive council) में और स्टेट सेक्रेटरी की कौंसिल में भी भरती होने का दावा करते है। आगे इस निबन्ध में मिस्टर गोखले ने और भी कई विचारणीय बातें कही थीं, उन्होंने एक वडे मार्के की यह बात कही थी कि जिले का प्रबन्ध जो भारतीय-शासन का मूल है केन्द्र शासन से हटा लिये जावे अर्थात् जिले का प्रबन्ध स्थानीय लोगों की सहायता से चलाया जावे। पहिले तो उसे केन्द्र सरकार के दफ्तरों और कई खास मुहकमों के अधिकार से धीरे धीरे युक्त करना चाहिये, और दूसरे जिले के लोगों को उसकी चाल पर अधिक अधिक अधिकार मिलने का मोका देना चाहिये, यहा तक अन्त में कर्मचारी लोग सचमुच (जैसे कि वे अभी केवल बातों में समझे जाते हैं) लोगों ही के नौकर (public servants) बन जावें।

काम की पहिली सीढ़ी यह होगी कि, जिले के अधिकारियों के साथ शासन के काम में लोगों के चुने हुए अगुआ लोगों की कमेटी का मेल पहिले पहिल केवल सलाह के लिये और पीछे क्षमता के अधिक अधिकार देकर कराया जावे। इसके आगे मिस्टर गोखले ने अपने इस निबन्ध में स्थानीय स्वराज्य (Local Self government) के विषय में कहा था —
"अभी वह देश भर में उसी स्थान पर मौजूद है जहां २५ वर्ष पहले लार्ड रिपन ने उसे रक्खा था और कहीं २ तो वह पीछे हट गया है। अब अधिक शिक्षित में स्थानीय कमेटियां पूरी प्रतिनिधि बनाई जावें और यद्यपि उन पर सरकारी अधिकार कम न होने पावे तो भी वे अफसरों की छोटी छोटी और सतानेवाली बाधाओं से मुक्त करदी जावें इसके आगे मिस्टर गोखले ने कौंसिल के विस्तार आदि के विषयों पर विशेष बल दिया है मिस्टर गोखले की अनेक वक्तृताओं में इस ढङ्ग के भाव भरे हुये हैं पर खेद है कि स्थान की कमी से हम उनको यहां उद्धृत करने में असमर्थ हैं।

उत्तर भारत मे दौरा और लालाजी का देश निकाला

समाचारपत्रों के पाठकों से यह अविदित नहीं है कि सन् १६०६ और ७ में इस के निवासियों में राजनैतिक विषयों को लेकर दो दल होगये थे। जो अभी तक मिटे नहीं हैं। उस समय इस देश के निवासियों की प्रवृत्ति ही दूसरी ओर थी। राजनैतिक कार्यकर्ता गरम दल में विभक्त

हम लोगों के लिये खुला है और उसमें हिन्दुस्तानी मान वृक्ष की चोटी तक चढ़ते दिखाई देते हैं और यदि हमारे देश वासी प्रधान न्यायाधीश (चीफ जस्टिस) और एडवोकेट जनरल के पदों के योग्य पाये जाते हैं, तो उन्हें आबकारी, अफीम, नमक, चुंगी, डाक, तार, पैमाइश, सेना और दूसरे महकमों की नौकरी न देना अन्याय है। वर्तमान प्रबन्ध में, भारत का गुरुत्व-केन्द्र लन्दन में है। हम इस अस्वाभाविक प्रबंध के विरोधी हैं और बड़े जोर से यह कहते हैं कि हिन्दुस्तान में नौकरी करनेवालों को जो परीक्षा देनी होती है, वह केवल लन्दन में न हो, किन्तु वह एक ही समय भारत और इङ्गलिस्तान में होवे। अब हम कलकत्ते के बड़े लाट और बम्बई और मदारस के छोटे लाटों की प्रबन्ध कारिणी सभाओं (executive council) में और स्टेट सेक्रेटरी की कौंसिल में भी भरती होने का दावा करते हैं। आगे इस निबन्ध में मिस्टर गोखले ने और भी कई विचारणीय बातें कही थीं, उन्होंने एक बड़े मार्के की यह बात कही थी कि जिले का प्रबन्ध जो भारतीय-शासन का मूल है केन्द्र शासन से हटा लिये जाने अर्थात् जिले का प्रबन्ध स्थानीय लोगों की सहायता से चलाया जावे। पहिले तो उसे केन्द्र सरकार के दफ्तरों और कई खास मुहकमों के अधिकार से धीरे धीरे मुक्त करना चाहिये, और दूसरे जिले के लोगों को उसकी चाल पर अधिक अधिक अधिकार मिलने का मौका देना चाहिये, यहां तक अन्त में कर्मचारी लोग सचमुच (जैसे कि वे अभी केवल बातों में समझे जाते हैं) लोगों ही के नौकर (public servants) बन जावें। इस

काम की पहिली सीढी यह होगी कि, जिले के अधिकारियों के साथ शासन के काम में लोगों से चुने हुए अगुआ लोगों की कमेटी का मेल पहिले पहिल केवल सलाह के लिये और पीछे क्षमता के अधिक अधिकार देकर कराया जावे। इसके आगे मिस्टर गोखले ने अपने इस निबन्ध में स्थानीय स्वराज्य (Local Self government) के विषय में कहा था — "अभी वह देश भर में उसी स्थान पर मौजूद है जहां २५ वर्ष पहले लार्ड रिपन ने उसे रक्खा था और कहीं २ तो वह पीछे हट गया है। अब अधिक शिक्षित में स्थानीय कमेटियां पूरी प्रतिनिधि बनाई जावें और यद्यपि उन पर सरकारी अधिकार कम न होने पावे तो भी वे अफसरों की छोटी छोटी और सतानेवाली बाधाओं से मुक्त करदी जावें इसके आगे मिस्टर गोखले ने कौंसिल के विस्तार आदि के विषयों पर विशेष बल दिया है मिस्टर गोखले की अनेक वक्तृताओं में इस ढङ्ग के भाव भरे हुये हैं पर खेद है कि स्थान की कमी से हम उनको यहां उद्धृत करने में असमर्थ हैं।

उत्तर भारत मे दौरा और लालाजी का देश निकाला

समाचारपत्रों के पाठकों से यह अविदित नहीं है कि सन् १९०६ और ७ में इस के निवासियों में राजनैतिक विषयों को लेकर दो दल होगये थे। जो अभी तक मिटे नहीं हैं। उस समय इस देश के निवासियों की प्रवृत्ति ही दूसरी ओर थी। राजनैतिक कार्यकर्ता गरम और नरम दल में विभक्त

होगये थे। सन् १९०६ में कलकत्ते में जब कांग्रेस हुई थी तब इस देश के नेताओं की परस्पर खेंचातानी से भय था कि कहीं कांग्रेस भङ्ग न होजावे परन्तु कलकत्ते में कांग्रेस का अधिवेशन भारत के वृद्ध और पूज्य नेता दादाभाई नौरोजी की अध्यक्षता में निर्विघ्न समाप्त हुआ। उस कांग्रेस में मिस्टर नौरोजी ने इस बात की आवश्यकता प्रकट की थी कि देश के मुख्य मुख्य भागों में कुछ लोग भ्रमण करके सर्व साधारण में राजनैतिक जागृति उत्पन्न करें। कलकत्ता कांग्रेस के समाप्त होते ही मिस्टर गोखले ने इस कार्य का बीडा उठाया और उन्होंने उत्तर भारत में भ्रमण किया। इस भ्रमण में मि० गोखले ने प्रयाग, आगरा, लाहौर, अमृतसर, जालन्धर, आदि स्थानों में अनेक व्याख्यान दिये थे। जिनमें से मुख्यत चार विषय थे। राजनैतिक परिस्थिति—"स्वदेशी"-"हिन्दू मुसलमान" और 'विद्यार्थियों के कर्त्तव्य"। इस भ्रमण में जहाँ कहीं मिस्टर गोखले गये थे। वहा उनका स्वागत बडी धूम धाम से हुआ था। उन्होंने स्थान स्थान पर हिन्दू मुसलमानों के पारस्परिक मेल से रहने की सलाह दी थी और कहा था कि देश की भलाई बुराई में हिन्दू मुसलमान दोनों का समान स्वार्थ है।

सन् १९०७ में पजाब की बडी भयङ्कर परिस्थिति थी। जमीन पर कर बढाने से वहां की जाट जाति में बडी खलबली मचरही थी। पगडी सम्हालो ओ जट्टा" आदि जोशीले गीत वहा घर घर में गाये जा रहे थे। इसका परिणाम यह हुआ कि रावलपिंडी के कुछ नेताओं पर राजद्रोह का मुकद्दमा चला। लाला लाजपतराय और सरदार अजीतसिंह देश

निर्वासित किये गये । इस पर मिस्टर गोखले ने बम्बई के एङ्गलो इण्डियन अखबार "टाइम्स आफ इंडिया" में एक लेख लिखा था जिसमें लाला लाजपतराय को विना किसी अभियोग के देश निकाला करने के लिये सरकार के कार्य की कड़ी आलोचना की थी । जितने दिन सरकार ने लाला लाजपतराय को मागडले में रक्खा था उतने दीन में कौंसिल के जो अधिवेशन हुए थे उन्हीं में लाला लाजपतराय के सम्बन्ध में प्रश्न किये थे । पजाबियों का गोखले ने कौंसिल में अच्छा पक्ष लिया था । इसी साल बम्बई की म्युनिस्पलटी की अध्यक्षता से कुछ एङ्गलो इंडियनों ने सर फिरोजशाह मेहता को हटाने की चेष्टा की थी उसके प्रतिवाद में बम्बई के माधोबाग में ७ वीं एप्रिल सन् १९०७ को एक सभा हुई थी उसके सभापति मिस्टर गोखले थे । मिस्टर गोखले की बड़ी प्रभावशालिनी वक्तृता हुई थी । बम्बई के एङ्गलो इण्डियन अखबार "टाइम्स" के जिस अंक में सरफिरोजशाह मेहता के ऊपर आक्षेप किये गये थे उस अंक को लोगों ने सभास्थल में फाड़ कर फेंक दिया था ।

कौंसिल में सुधार

सन् १९०८ में गोखले पुन विलायत गये, यदि कहा जाय कि सन् १९१० से कौंसिल का जो नवीन सगठन हुआ है, वह मिस्टर गोखले के प्रयत्न का फल है तो अत्युक्ति न होगी। जब सन् १९०८ में गोखले महोदय गये थे, तब उन्होंने कौंसिलों के सुधार के सम्बन्ध में लार्ड मोर्ले से कईवार भेंट की,

थी। और यहां तक सुना जाता है कि लार्ड मोर्ले ने उनको रिफार्म स्कीम का ड्राफ्ट (मसविदा) तक दिखला दिया था। उन्होंने इस स्कीम के सम्बन्ध में लार्ड मोर्ले को उचित सम्मति दी थी। उनकी मृत्यु के पश्चात् "इङ्गलिशमैन" जैसे कट्टर एङ्गलो इन्डियन अखबार तक को मुक्तकंठ से यह कहना पड़ा है कि कौंसिल के सुधारों पर गोखले के मत की छाप है" सन् १९०८ की मद्रास कॉंग्रेस में मिस्टर गोखले ने इस स्कीम के सम्बन्ध में एक प्रभावशाली वक्तता दी थी।

दक्षिण अफ्रीका की यात्रा

दक्षिण अफ्रीका में प्रवासी भारत सन्तानों को कैसी कैसी यन्त्रणायें मिल रही हैं। वहां बेचारे हिन्दुस्तानियों को मनुष्योचित्र अधिकार की प्राप्त नहीं है। मिस्टर गोखले का ध्यान, दक्षिण अफ्रीका में भारतवासियों पर जो अत्याचार हो रहा था, उस ओर गया था। उन्होंने ४ मार्च सन् १९१२ को बड़े लाट की कौंसिल में एक प्रस्ताव उपस्थित किया था कि शर्तबंधे हुये मजदूर वहां पर न भेजे जाय। पर कुछ परिणाम नहीं हुआ। अन्त में वहां की परिस्थिति से परिचित होने के लिये मिस्टर गोखले ने दक्षिण-अफ्रीका की यात्रा की। पहले जब वे इङ्गलैण्ड से चलने लगे तो दक्षिण-अफ्रीका को जानेवाले जहाज ने पहले दर्जे का टिकट देना स्वीकार नहीं किया परन्तु वहां पहुचते ही यूनोयन सरकार ने बड़ा भारी आदर किया था। वहां वे दक्षिण-अफ्रीका की सरकार के मेहमान रहे थे। वहां की सरकार ने उनका बड़े ठाठ बाट से स्वागत किया था। और प्रवासी भारत सन्तान भी अपने नेता के

दर्शनों से प्रफुल्लित हुए। उन्होंने मिस्टर गोखले को कितनेही अभिनन्दनपत्र समर्पित किये थे परन्तु वहां के गोरे अफसरों और सरकार ने मिलकर वे भी इस झगडे को शान्त नहीं कर सके। मिस्टर गोखले के आन्तरिक अभिप्राय को विना समझे हुए ही अनेक भारतवासियों ने उन पर आक्षेप करने आरम्भ कर दिये थे। यहा तक सरफिरोजशाह मेहता और बाबू सुरेन्द्रनाथ बनर्जी का "बङ्गाल" अखबार भी उन से प्रसन्न नहीं हुए। वहां से लौट कर मिस्टर गोखले ने १४ दिसम्बर सन् १९१२ को बम्बई के टाउन हाल में और फिर *बांकीपुर की कांग्रेस में अपने व्याख्यानों में लोगों का भ्रम दूर किया।

इसके कुछ दिन पीछे दक्षिण अफ्रीका में वहाँ की सरकार और निवासियों के घृणित भावों से उकताकर भारत वासियों ने निष्क्रिय प्रतिरोध (Passive Resistance) अर्थात् यूनियन सरकार ने प्रवासी भारतवासियों को रोकने के लिये जो अनुचित कानून, नियमादि बनाये थे, उसका क्रियात्मक रूप से प्रतिवाद करना आरम्भ किया था जिस के कारण कर्मवीर महात्मा गांधी तथा उनके साथियों को अनेक कष्ट भोगने पड़े थे। इस आन्दोलन में प्रवासी भारतसन्तानों को धन की विशेष आवश्यकता आन पडी। उनके बाल बच्चे तक भूखों मरने लगे। मिस्टर गोखले ने वहा के निवासियों की सहायतार्थ लाखों रुपये चन्दा किया। मिस्टर गोखले अपने कर्त्तव्य को कितना पहचानते थे कि दिल्ली के सेन्ट स्टीफिन्स-

*बांकीपुर में-मि० गोखले की वक्तृता के पश्चात् माननीय पं० मदनमोहन मालवीय जी की हिन्दी भाषा में "दक्षिण अफ्रिका मे प्रवासी भारतवासियों की परिस्थिति" पर बड़ी ओजस्विनी वक्तता हुई थी।

कालेज के विद्यार्थियों ने प्रवासी भारतसन्तानों की सहाय, तार्थ कुछ चन्दा इकट्ठा किया था और मिस्टर गोखल को अपने यहां निमन्त्रित किया था उस समय वे ज्वर से पीडित थे, पर इसकी कुछ चिन्ता न करके थोडी देर के लिये कालेज में पहुच ही गये। उस पीडितावस्था में ही मिस्टर गोखले ने और भी कई स्थानों में वहावालों की सहायतार्थ भ्रमण किया था। उनका यह परिश्रम सफल भी हुआ। जहां उनके देशवासियों ने अनुरोध पर अपने भाइयों की सहायतार्थ अपनी थैलियों का मुंह खोल दिया था, वहां हमारे प्रजा प्रिय लार्ड हार्डिञ्ज की कृपा से दक्षिण अफ्रीका प्रवासी भारत सन्तानों के कुछ कष्ट दूर होगये हैं।

पबलिक सरविस-कमीशन

भारतवर्ष का शिक्षित सम्प्रदाय बहुत दिनों से यह आन्दोलन कर रहा है कि भारतवासियों को सरकार के यहा बडी बडी नोकरिया बहुत कम मिलती हैं सिविल सरविस आदि की परीक्षाए विलायत में होने के कारण भारतवासियों को सुविधा नहीं है इसकी जाच के लिये सन् १९१२ में पबलिक सरविस कमीशन बैठा। उसके एक सदस्य मिस्टर गोखले भी हुये। सदस्य होने पर गोखले चाहते तो १५०००) पन्द्रह हजार रुपया वार्षिक इस कमीशन से ले सकते थे, पर ऐसा करने से उन्हें कौंसिल की मेम्बरी छोडनी पडती। इससे कौंसिल में भारत के प्रजाजन की बडी हानि होती, अतएव उन्होंने इस विचार से वह बडी आय स्वीकार नही, की अस्वस्थ रहने पर भी वे कमीशन की बेठकों में सम्मिलित

हुआ करते थे और अत्यन्त परिश्रम पूर्वक उसका कार्य किया करते थे। डाक्टरों ने कई बार उनसे कमीशन में सम्मिलित न होने के लिये कहा था। पर देश की चिन्ता के सामने उन्हें अपने स्वास्थ्य तक की परवाह नहीं रही थी। बीच बीच में दो एक बार के लिये डाक्टरों के अनुरोध से उन्होंने कमीशन का काम छोड़ भी दिया था। परन्तु स्वास्थ्य के तनिक अच्छे हो जाने पर ही वे उसमें सम्मिलित हो जाते थे।

इस कमीशन के सम्बन्ध में उन्हें दो बार विलायत जाना पड़ता था इस एप्रिल मास में भी वे विलायत जाते परन्तु कराल काल ने उनको पहिले ही घेर लिया। जिससे इस कमीशन के सम्बन्ध में उनके हृदय की लालसाएँ, उनके हृदय में ही समा गई। अब इस कमीशन में प्रजामत का पक्ष लेने वाला, मिस्टर गोखले के सिवाय दूसरा कोई नहीं है। कमीशन के कार्य्यों में गोखले महोदय को कठिन परिश्रम करना पड़ता था इस विषय में उन्होंने "अमृत बाजार—पत्रिका" के सम्पादक से स्वयं कहा था —"मुझे बड़ी कठिन लड़ाई लड़नी पड़ती है वे कई हैं मैं अकेला हूं विशेष परिश्रम करने के कारण मेरा स्वास्थ्य खराब हो गया है और मैं अपने को मृत्यु का शिकार बना रहा हूं। परन्तु तिसपर भी मुझे अपनी चिन्ता नहीं देश की चिन्ता है"। इसमें सन्देह नहीं कि यदि गोखले पबलिक सरविस कमीशन की रिपोर्ट के प्रकाशित होते समय जीवित रहते तो देशवासियों को बहुत नई बातों का पता लगता। मालूम नहीं, वे अपनी रिपोर्ट भी छोड़ गये हैं या नहीं।

शिक्षा सम्बन्धी उद्योग

अब तक पाठकों ने हमारे चरित नायक को राजनैतिक ससार में देखा है अब हम उनके कुछ शिक्षा और सामाजिक सुधार सम्बन्धी विचारों का भी परिचय देना चाहते हे। मिस्टर गोखले ऋषि कल्प रानाडे के शिष्य थे, रानाडे महोदय का विचार था कि देश की उन्नति केवल एक विषय पर ही निर्भर नहीं रहती है। समस्त विषयों को सुधारने और उन्नत करने की आवश्यकता हुआ करती है। गोखले महोदय के भी ऐसे ही विचार थे, परन्तु उन्हें राजनैतिक कार्य्यों में विशेष योग देना पडता था पर साथ यह बात नही थी कि वे देश सम्बन्धी अन्य विषयों के विरोधी हों। शिक्षा का कार्य्य तो बहुत अधिक किया था। पूना के फरग्यूसन कालेज के प्रोफेसर होने और शिक्षा का एक आदर्श उपस्थित करने के अतिरिक्त उन्होंने समय समय पर शिक्षा सम्बन्धी अपने बडे गहन और गम्भीर विचार प्रकट किये थे। बम्बईके ग्रेज्युएट्स एसोसियेशन के वार्षिक अधिवेशन में उन्होंने ११ वीं एप्रिल सन् १८९६ को एक व्याख्यान दिया था जिसमें उन्होंने वर्तमान शिक्षापद्धति के अनेक दोषों को दूर करने के लिये बल दिया था। इस व्याख्यान में उन्होंने वर्त्तमान शिक्षा प्रणाली के दोषों को निर्भय होकर प्रकट किया था। जिस तरह से आज कल विद्यार्थी गण रट रट कर परीक्षाओं में उत्तीर्ण होते हैं, इसपर उन्होंने अत्यन्त खेद प्रकट किया था। इसके अतिरिक्त उन्होंने लण्डन के ईस्टइण्डियन एसोसियेशन में जो "स्वराज्य" पर निबन्ध पडा था उसमें शिक्षा के सम्बन्ध में उन्होंने अपने यह विचार प्रकट किये थे—"सर्वसाधारण

की शिक्षा भी इतनी तेजी के साथ दी जानी चाहिये कि आज की तारीख से बीस वर्ष के भीतर अगर जल्दी न हो सके तो लड़कों और लड़कियों को मुफ्त और जबरदस्ती शिक्षा देने का प्रबन्ध हो जावे "।

समय समय पर मिस्टर गोखले सर्व साधारण में शिक्षा सम्बन्धी अपने विचार प्रकट करके ही चुप नहीं हुये थे। उन्होंने बड़े लाट की कौंसिल में प्राथमिक शिक्षा का जो बिल उपस्थित किया था उसकी बात हम पहिले कह चुके हैं। उस प्रस्ताव के समर्थन में भारतवर्ष के बहुत से स्थानों में सभाएं हुई थीं। स्वयं मिस्टर गोखले ने अनेक स्थानों में अपने प्रस्ताव के सम्बन्ध में वक्तृता दी थी सारा देश मिस्टर गोखले के इस बिल के पक्ष में था। जब दूसरे वर्ष उन्होंने बिल उपस्थित किया और जब कुछ सरकारी और कुछ चाटुकारिता प्रिय मेम्बरों ने इसका विरोध किया था तब मिस्टर गोखले ने कौंसिल में बड़ी युक्ति युक्त पूर्ण और ओजस्विनी वक्तृता दी थी। उन्होंने अपनी वक्तृता में बिल के उन विरोधियों को जिनका कथन यह था कि जबरदस्ती शिक्षा देने से अशान्ति फैलेगी एक स्थल पर कहा --

इस अवस्था में हम लोगों का कर्त्तव्य क्या होनाचाहिये वस्तुत, समस्त सभ्य जगत ने इस जटिल प्रश्न की मीमांसा जबरदस्ती शिक्षा देकर ही की है और करने का प्रयत्न किया है। क्या हम लोग ही ऐसे मार्ग पर डटे रहेंगे जिससे मूर्खता बराबर बनी रहेगी। उदाहरण के लिये फिलिपाइन्स टापू सीलोन और बड़ौदा राज्य काफी है केवल यह कह देने से काम नहीं चलेगा कि इनकी अवस्था ब्रिटिश भारत से भिन्न

प्रकार की है। सच बात तो यह है कि दो उदाहरण एक दम एक सरीखे ही नहीं दे सकते । सीलोन के अधिवासी और दक्षिण भारत के अधिवासी तथा बड़ौदा राज्य के अधिवासी और वृटिश गुजरात के अधिवासी में भेद ही क्या है इसके आगे मिस्टर गोखले ने अपनी वक्तृता में बम्बई प्रान्त के अन्तर्गत सांगली देशीय राज्य का उदाहरण दिया था जहां प्राथमिक शिक्षा जबरदस्ती से दी जाती है एक स्थान पर उन्होंने अपनी इस वक्तृता में कहा था कि जो लोग सार्वजनिक शिक्षा से ब्रटिश शासन के नाश की शङ्का करते हैं, उनका भय निष्कारण है राज्य को भय मूर्ख लोगों से ही है न कि जानकारों से जो लोग यह कहते हैं कि भारत में आज ऐसा कानून नहीं बनाया जा सकता है वे भूलते हैं। सीलोन, बड़ौदा और सांगली के उदाहरणों से सिद्ध होगया है कि लोगों का यह कथन निस्सार है, जो लोग यह कहते हैं कि जबतक पढ़ने योग्य उम्र के अधिकांश लड़के पढ़ने न लग जॉय तब तक जबरदस्ती की जाय वे अन्य देशका उदाहरण नहीं देखते। जिस समय जबरदस्ती शिक्षा आरम्भ की गयी उस समय इङ्गलैण्डमें सैकड़ा पीछे ४३ और जापानमें सैकड़ा पीछे २८ लड़केही पढ़ते थे। जो लोग शिक्षा की दुहाई देकर कहते हैं कि जबरदस्ती से शिक्षा थोड़ी काम की दी जायगी इसलिये वह आवश्यक है। यहां इस समय उक्त शिक्षा से सुयोग शिक्षकों और सुनिर्वाचित पाठ्य पुस्तकों की ही आवश्यकता है, उनसे मैं कहूगा कि असल उद्देश्य सम्पूर्ण अज्ञान का नाश करना है। इसके लिये नाम रुपये वेतन के शिक्षक और भाड़े के अथवा लोगों के प्रदत्त

पर भी यथेष्ट हैं। ये विपत्तियां इङ्गलैंड और रशिया में भी प्रारम्भ में थीं और आज भी हैं। जबरदस्ती होजाने के पीछे ये सुधार अवश्य होते रहेंगे, पर इन सुधारों के होजानेतक जबरदस्ती करना—बुद्धिमत्ता नहीं है। . आज कल प्रत्येक बालक को प्राथमिक शिक्षा के लिये प्रतिवर्ष फी बालक चार रुपये लगते हैं सरकार जो उन्नति करना चाहती है, उसके हो जाने पर भी डाइरेक्टर जनरल मि० आरेञ्ज के हिसाब से ही प्रत्येक बालक पर प्रति वर्ष पाच रुपये लगेंगे आज हिन्दुस्तान में ६ से १० वर्ष तक की उम्र के सवा करोड लड़के हैं इनमें ४० लाख आज शिक्षा पा रहे हैं। अपनी इस वक्तृता में मिस्टर गोखले ने उन देशी मेम्बरों को जिन्होंने इस बिलके विपक्ष में सम्मति दी थी, उनको खूब फटकार बतलायी थी।

समाज सुधार सम्बन्धी विचार

बहुत से लोगों का विचार है कि मिस्टर गोखले समाज सुधारक नहीं थे अथवा समाज सुधार सम्बन्धी बातों से दूर रहते थे हमारी समझ में ऐसा कहने वाले भूलते हैं। इस में सन्देह नहीं कि मिस्टर गोखले समाज सुधार सम्बन्धी कामों में बहुत कम योग देते थे परन्तु इसका कारण यह था कि वे देशके राजनीतिक कार्यों में इतने व्यस्त रहते थे कि उनको दूसरे कामों में योग देने का बहुत कम समय मिलता था, परन्तु यह नहीं है कि वे समाज सुधारक न होकर कार्य करनेवाले थे। अपनी लडकियों का बडी अवस्था तक विवाह

न करना और उनको शिक्षा देना, उनके समाज सुधारक हाने का पक्का सबूत है। इसके अतिरिक्त उन्होंने सन् १८६७ में एक सभा में "भारतवर्ष में स्त्री शिक्षा" शीर्षक एक निबन्ध पढ़ा था उसमें उन्होंने भारतवर्ष में स्त्री-शिक्षा के प्रचार न होने और लड़कियों का छोटी उम्र में विवाह करदेने पर खेद प्रकट किया है। उनकी और भी कई वक्तृताओंसे पता लगता है कि वे भारतवर्ष की स्त्रियों को तथा उन बेचारों को जिनको हम अछूत जातिया कहकर घृणा करते हैं विद्यादान देने के बड़े पक्षपाती थे। सन् १६२३ की २७ वी अप्रेल को उन्होंने बम्बई की प्रान्तिक समाज सुधारिणी सभाका जो अधिवेशन धूलिया में हुआ था उसमें अछूत जातियोंके उठाने के सम्बन्ध में वक्तृता दी थी उसमें उन्होंने अछूत जातियों की वर्त्तमान दशा पर अत्यन्त दु ख प्रकट किया था। इस वक्तृताको पढते ही ज्ञात होजाता है कि मिस्टर गोखले के हृदय में अन्त्यज जातियों के प्रति कितनी सहानुभूति थी। उन्होंने अपनी वक्तृता में कहा था -"हम कुत्ते बिल्ली आदि चाहे जिस जान वर को छू सकते हैं इसमें कुछ पाप नहीं है पर अछूत जातियों से छूजाना पाप है" गोखले महोदय न अपनी इस वक्तृता में यही दर्शाया कि अछूत जातियों को उठाये विना कभी राष्ट्र निर्माण नही हो सकता है।

रोग और मृत्यु

"दुःख से आखें हैं भरी आती
कहते छाती है फाटी जाती" ॥

यद्यपि कहीं कुछ कहने की हिम्मत न होने पर भी कहे बिना नहीं रहा जाता है। यह हम पहिले ही कह चुके हैं कि पब्लिक सर्विस कमीशन में कार्य करते समय ही मिस्टर गोखले बीमार होगये थे। उस बीमारी की अवस्था में भी वे अपना कर्त्तव्य पालन करते रहे थे यह हमारे देश का दुर्भाग्य है, कि यहां काम करनेवाले जल्दी ही मृत्यु के ग्रास हो जाते हैं इसका कारण भी यह है कि यहां देश सेवकों को आवश्यकतासे अधिक कार्य करना पड़ता है। क्योंकि इस देश में काम करने वालों का हाथ बटानेवाले बहुत कम हैं पर काम में बाधा डालनेवाले बहुत हैं। मिस्टर गोखले की भी यही दशा हुई निरन्तर परिश्रम करने और तनिक भी विश्राम न करने से उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया। उन्हें देश सेवा से इतना अवकाश न मिला कि वे अपना स्वास्थ्य सुधार लेते। बस अन्त आही पहुंचा, जिस बात की आशंका न थी, वही बात हुई। यद्यपि वे मधुमेह रोग से १५ वर्ष से बीमार थे परन्तु दो वर्ष की लगातार बीमारी से उनके जीवन प्रदीप का तेल शनै शनै कम हो रहा था, वे बीमारी के कारण ही इस वर्ष इण्डियन नेशनल कांग्रेस में नहीं गये थे। मृत्यु के पांच दिन पहिले उन्हें श्वास की बीमारी होगयी थी। गत १३ वीं फरवरी १६१५ को महात्मा गान्धी पूना गये थे। गोखले ने उनके स्वागत के लिये उद्यान भोज दिया था। परन्तु उसी दिन गोखले महोदय की तबि-

यत खराब होगयी थी सो शीघ्र चले आये। इसके बाद उनकी तबियत कुछ अच्छी भी होगई थी २१ फरवरी को बड़े लाट की कौंसिल में वे दिल्ली जानेवाले थे। परन्तु फिर रोग बढ़ गया और इसके कारण वे नहीं जा सके। १८ वीं तारीख को अर्थात् मृत्यु के एक दिन पहिले उनकी दशा भयङ्कर होगई थी शुक्रवार १६ वी फरवरी को डाक्टरों को मृत्यु के लक्षण प्रत्यक्ष प्रतीत होने लगे, मिस्टर गोखले ने अपनी मृत्यु का अन्तिम समय निकट जान कर अपने परिवार के सब लोगोंको बुलाया और कुछ परामर्श दिया। भारत सेवक समिति के सदस्यों से उन्होंने उस काम को चलाने के लिये अनुरोध किया और कहा —"मेरी कोई जीवनी न छापी जाय"। मृत्यु का समय निकट जानकर वे तनिक भी विचलित नहीं हुए और कहने लगे कि अब दूसरी दुनियाँ को भी देखना चाहिये। अन्तिम समय गोखले को केवल पबलिक सरविस कमीशन के काम को पूरा न करने का दुख रहा। भारतसेवक समिति का उन्होंने अपनी ओरसे कोई सभापति नहीं चुना और उसका निर्वाचन सेवक समिति के सदस्यों पर हीछोड़ा।

१६ वीं फरवरी को रात्रि के दस बज के पचीस मिनट पर उन का जीवन प्रदीप बुझ गया शोक है भारत गगन मण्डली से राजनैतिक सूर्य अस्त हो गया, समस्त भारत वर्ष में कन्याकुमारी से लेकर हिमालय तक और पेशावर से कलकत्ते तक सारा देश शोक से छागया। वृद्धा भारत माता अपने लाल के लिये रोती, तड़फती, बिलखती रह गई, दुष्टा मृत्यु ने उस पर तनिक सी दया नहीं की। निर्दय काल ने। उसके रोने बिलखने पर कुछ ध्यान नहीं दिया

भारत का नेता, नव्य भारत का शिक्षक, प्रजा और राजा का शुभ चिन्तक उठ गया। सारे देश में एक छोर से दूसरे छोर तक शोक और दुःख की कालिमा छागई पूना का तो कहना ही क्या था, इस शोक समाचार को सुनते ही अगणित नर नारी भारत सेवक समिति के सामने अपने नेता के अन्तिम दर्शन करने के लिये एकत्रित होगये। लगभग बीस हजार आदमियों की भीड जुड गई। गोखले से राजनैतिक विषयों में सदैव से महात्मा तिलक का मत भेद रहा था। परन्तु इस अवसर पर वे अपने समस्त मतभेद को भूलकर सिंह गढ से मोटर में आये, हिज़हाईनेस आगा खां ने गोखले की रथी पर फूल चढाने के लिये भेजे।

प्रात काल दस बजे पर गोखले के शव का श्मशान भूमि को लेजाने का विचार था पर भीड इतनी हुई कि डेढ बज गया। श्मशान भूमि तक पहुचने में दो घण्टे लगे। मि० प्रैंधर और डाक्टर भण्डारकर ने उपस्थित जन मडली में गोखले की दश सेवा के सम्बन्ध में कुछ कहा, तत्पश्चात् उपस्थित जन मण्डली के अनुरोध से लोकमान्य तिलक भी इस शोकप्रद प्रसङ्ग पर कुछ कहने को खडे हुए तालियों की गड गडाहट ने उनका स्वागत किया गया इस पर मराठी भाषा में महात्मा तिलक ने वक्तृता की थी। जोआगे प्रकाशित है –

तिलक की वक्तृता

तालियों के बजाने पर महात्मा तिलक ने शोक प्रकट करते हुए कहा—यह समय तालिया पीटने का नहीं, रोने का है। गोखले की मृत्यु से वृद्धा भारत माता की जो अकथनीय

हानि हुई है, उस पर यह रोने का अवसर है क्या तुम देखते नहीं हो, भारत के हीरा, महाराष्ट्र के रत्न, प्रमुख कार्यकर्त्ता वीर गोखले आज इस मृत्यु शय्या पर घोर विश्राम कर रहे हैं। आंखें खोलकर उनकी ओर देखो और उनसे कर्तव्य करना सीखो। गोखले अपना कर्तव्य उत्तम रीति से करके यहां से चले गये। क्या उनके स्थान पर तुम में से कोई आवेगा? विजयी वीर की भांति गोखले अपने नाम को चिरस्थाई करके जा रहे हैं। योग्य रीति से अपनी जन्मभूमि के प्रति कर्त्तव्य पालन करने का जैसा उत्तर ये परलोक में देंगे, वैसा उत्तर तुम लोग तो क्या भारतमाता का कोई भी पुत्र न दे सकेगा। प्रमाणिक रीति से अपना सच्चा कर्त्तव्य पालन करने का उत्तर ऐसा उत्तमता से ईश्वर को देने का सौभाग्य अब तक बहुत ही थोड़े पुरुषों को प्राप्त हुआ है। गोखले को मैं बिलकुल बचपन से जानता हूं। वे साधारण आदमी थे। वे न कोई मालगुजार थे, न रियासतदार और न मालदार ही थे बल्कि हमारे तुम्हारे जैसे ही थे। वे अपनी बुद्धि, बल और कर्त्तव्य के सामर्थ्य से ही इस पद पर पहुंचे थे। यद्यपि आज गोपाल राव चले गये, हमसे बिछुड़ गये। पर वे पीछे ऐसी कितनी ही बातें छोड़ गये हैं जिनसे तुम शिक्षा ग्रहण कर सकोगे। इन बातों पर ध्यान देकर तुम में से प्रत्येक को प्रयत्न करते रहना चाहिये जिससे गोखले की कमी पूरी हो और इस प्रकार तुम्हारे प्रयत्न करते रहने से ही स्वर्ग में गोखले को आनन्द होगा। कर्त्तव्य वश महात्मा गोखले और महात्मा तिलक में प्रतिद्वन्दता रही हो यह बात जुदी है परन्तु गुणी लोग सदैव गुणी का आदर करते रहते हैं। बिछुड़न समय

बड़ा प्रभावोत्पादक होता है उस समय सारा मत भेद सारे सिद्धान्तों का झगड़ा सारी प्रतिद्वन्दता मिट जाती है। यह बात सदेव से चली आ रही है वीर चूड़ामणि कर्ण सदेव महात्मा भीष्म पितामह का विरोध करते रहे परन्तु महाभारत के युद्ध में भीष्मपितामह के पतन होते ही कर्ण अपने समस्त विरोध भाव को भूल गये। भीष्मपितामह कौरवों की ओर से युद्ध कर रहे थे पर पाण्डव उनकी मृत्यु पर खूब रोये थे। अतएव जिन लोगों का गोखले से मतभेद था वेभी आज अपने समस्त मतभेद को भूलकर गोखले की मृत्यु पर रो रहे हैं मृत्यु पर शोक प्रकट करते हुए उनका गुण गानकर रहे हैं मतभेद होनेपर किसी के गुणो का भुला देना ठीक नहीं है। गोखले की मृत्यु पर इसी उच्च और उदार उदाहरण का परिचय लोकमान्य तिलक जी ने दिया है। क्या हमारे जन साधारण लोकमान्य तिलक महोदय के इस उदाहरण के अनुकरण करने की चेष्टा करेंगे।

साम्राज्य मे शोक

हम पहले कह आये हैं कि महात्मा गोखले की अकाल मृत्यु से इस समय समस्त देश शोक ग्रस्त हो रहा है। भारत वर्ष में ही नहीं समस्त ब्रिटिश साम्राज्य में जहा कभी सूर्य अस्त नहीं होता है, शोक फैल रहा है। कितने ही स्थानों मे गोखले की मृत्यु के कारण स्कूल, कालेज व द हुए। अदालतें बन्द हुई। मृत्यु समाचार पाते ही हाईकोर्ट की छुट्टी कर दी गई। लार्ड हार्डिञ्ज महोदय ने बड़ी व्यवस्थापकसभा (लेजि

गोखले की मृत्यु से अत्यन्त शोक हुआ था, उन्होंने गोखले की मृत्यु पर यह सन्देश अपने देश वासियों के प्रति प्रकट किया था—"मुझे अपने एक मित्र से यह सुनकर अत्यन्त दु:ख हुआ कि गोखले की मृत्यु होगई। हाय भारतवर्ष पर कैसी विपत्ति आई! देश की बड़ी हानि हुई है। इससे अधिक मैं और कुछ नहीं कह सकता। मेरी सब आशाओं पर गोखले की मृत्यु के साथ ही पानी फिर गया। पर मुझे कुछ थोड़ा सा सन्तोष यह है कि गोखले की वियोग वेदना को सारा देश अनुभव कर रहा है। समस्त देश गोखले जो कुछ कार्य करना चाहते थे, उसको जानता है और उसकी प्रशंसा कर रहा है। दूसरे देशभक्त नवयुवक गोखले के उदाहरणका अनुकरण करेंगे और जो कुछ गोखले करना चाहते थे, उसकी पूर्त्ति करेंगे। तिस पर भी मैं यह शोक प्रकट किये बिना नहीं रह सकता कि यदि गोखले की मामूली उम्र सत्तर वर्ष की भी होती तो वह जो कुछ कार्य करना चाहता था, पूरा कर जाता।" क्या बूढ़े दादाभाई नौरोजी की आशा को इस देश के नवयुवक पूर्ण नहीं कर सकते हैं?

वस्तुत गोखले की मृत्यु से जैसा शोक इस देश में हुआ है वैसा पहले कभी देखने में नहीं आया। बम्बई में जो शोक सभा हुई थी उसमें इतनी भीड़ थी कि एक दूसरी सभा उसी समय करनी पड़ी थी। सभी जानते हैं कि सर फीरोजशाह मेहता बड़े अच्छे वक्ता थे, परन्तु गोखले की मृत्यु के कारण वे इतने दुखित हुये कि शोक सभा में बहुत देर तक नहीं बोल सके, दादाभाई नौरोजी के सामने यह निराशा अपनी वक्तृता में प्रकट की कि "इस वर्ष मैंने देश के लिये जो कुछ

कार्य सोचे थे, न मालूम गोखले की सहायता विना कैसे पूर्ण होंगे" प्रयाग में २८ वीं फरवरी को जब गोखले की अस्थियां गङ्गा में विसर्जन की गई थीं तब पन्द्रह बीस हजार आदमी की भीड थी, और सभी शोक से व्याकुल हो रहे थे; लोग रोते थे छाती पीटते थे। भारतवर्ष में ही नहीं, गोखले का मृत्यु के कारण दक्षिण अफरीका, इङ्गलैण्ड वगैरह में भी अनेक शोक सभाएं हुईं। दक्षिण अफरीका में जनरल स्मट्स ने भी शोक प्रकट किया, इङ्गलैण्ड में पार्लीमेंट के कितने ही मेम्बरों ने और बडे बडे प्रतिष्ठित अङ्गरेजों न शोक प्रकट किया। स्वयं सम्राट जार्ज और साम्राज्ञी मेरी ने बडे लाट की मार्फत गोखले के परिवार को खेद सूचक जनक और सहानुभूति का तार भेजा था।

सच्चा स्मारक और शिक्षा

गोखले की मृत्यु पर शोक प्रकाश करने के लिये स्थान स्थान पर शोक सभाएं हुई थीं और सभी सभाओं में अनेक प्रकार से उनके स्मारक स्थापित करने की चर्चा हुई थी। सच पूछिये तो ऐसे महापुरुष के जितने स्मारक स्थापित किये जाय, जिस ढङ्गे बनाये जाय सभी थोडे हैं। परन्तु देखना चाहिये कि सच्चा स्मारक महात्मा गोखले का क्या हो सकता है? यदि मुझ से कोई पूछे तो मैं कहूंगा कि गोखले का सब से पहले और सच्चा स्मारक, उनकी स्थापित की हुई 'भारत सेवक-समिति" है। महात्मा गोखले ने भी मृत्यु शय्या पर पडे हुए यही इच्छा प्रकट की थी कि मेरे कोई

हिन्दुस्तानी समझें। वास्तव में हम लोग गोखले का सच्चा स्मारक बनाना चाहते हैं, तो हिन्दू, मुसलमान का भाव त्याग करके, आपस के व्यर्थ लड़ाई, झगड़ों को लात मार कर देश सेवा का बीडा उठावें। भारतमाता की सेवा का व्रत ग्रहण करें। धर्म सम्बन्धी मत भेदों पर न लड कर भारत माता की पूजा और आराधना ही अपना कर्त्तव्य समझें। महात्मा गोखले का जीवन अपने देश की सेवा करने को बडी भारी शिक्षा देता है।

यों तो गोखले की मृत्यु पर सभी एङ्लो इण्डियन और देशी अखबारों ने शोक प्रकट किया है पर पूना के "केसरी" अखबार (लोकमान्य तिलक का पत्र है) अपना विचार पूर्ण सम्मति प्रकट की है, उसने गोखले के अनेक गुणों का उल्लेख करते हुए लिखा है–"*कोई इनकी बुद्धिमानी की प्रशंसा करते हैं, तो कोई इनके उद्योग को सराहते हैं कोई इनको सरलता की पूर्त्ति मानते हैं, तो कोई इनके निरभिमानी होने के गीत गाते हैं। परन्तु हमारे मन में सब ऊपरी गुण हैं। और इस सम्बन्ध की कुछ बातों में किसी किसी का मान्यवर गोखले महोदय से मत भेद हो सकता है। ये सारे गुण और कर्त्तृत्व शक्ति जिस एक आन्तरिक सद्गुण से उत्पन्न होते हैं, उस गुण के सम्बन्ध में मतभेद होना बिलकुल सम्भव नहीं। और वह गुण "निस्वार्थ अन्त करण से अपने आप को, देश सेवा में अर्पित करदेना है।" बाल्य काल

* मराठी—"केसरी" लेख का यह अंश कानपुर के "प्रताप" से उद्धृत किया गया है।

में अभ्यास और युवाकाल में संसार सुख समाप्त करके अपनी शारीरिक और मानसिक शक्तियों के कर्तव्य शून्य होने पर लोक कल्याण के मार्ग में आनेवाले पुरुष मिले भी तो वे कुछ विशेष आदर के पात्र नहीं है परन्तु जब इन्द्रियां बल से भर रहा है, शरीर में सामर्थ्य लहरें मार रहा है, वृद्धाव स्था कल्पना में भी नहीं दीखती है। सामर्थ्य संसार के सुख सम्पत्ति को घसीट लाने में एक भारी से भारी उद्योगी से कम नहीं है, संसार के आनन्द का रूप मनोहर रत्न सा दीखता हुआ चित्त की वृत्तियों का सहज ही में खींच सकता है—ऐसी अवस्था में और विशेष कर ऐसे संसार के सुख साधनों के मार्गों में से सुख और सम्पत्ति मिलने का दृढतर विश्वास होते हुये भी इन सब मनोहर दृश्यों पर से दृष्टि को बलपूर्वक पीछे हटा लेना और अपनी शक्ति से देश सेवा में लग जाना और उसमें आई हुई आपत्तियों के सहने में आनन्द मानना और इस भगीरथ प्रयत्न के लिये एकनिष्ठा से सतत परिश्रम करने को तैयार रहना, इन सब तपस्याओं के लिये मनो-निग्रह की आवश्यकता हुआ करती है। और इस प्रकार का मनोनिग्रह जिस पुरुष ने संसार में दिखाया वह धन्य है।" वास्तव में हम भी "केसरी" के शब्दों में यही कहेंगे कि मि० गोखले में यही गुण था। वे निस्वार्थ भाव से देश सेवा में जुटे हुये थे। जो लोग यह समझते हैं कि युवावस्था में हम नौकरी चाकरी करलें वृद्ध होने पर पेन्शन लेकर देश की सेवा करेंगे वे भूलते हैं भला कहीं तब देश सेवा हो सकती है जब सारे अंग शिथिल पड़गये हैं विवेक और विचार शक्ति का ह्रास होगया है मस्तिष्क की सब शक्तियाँ निकम्मी पड़

हिन्दुस्तानी समझें। वास्तव में हम लोग गोखले का सच्चा स्मारक बनाना चाहते हैं, तो हिन्दू, मुसलमान का भाव त्याग करके, आपस के व्यर्थ लड़ाई, झगड़ों को लात मार कर देश सेवा का बीड़ा उठावें। भारतमाता की सेवा का व्रत ग्रहण करें। धर्म सम्बन्धी मत भेदों पर न लड़ कर भारत माता की पूजा और आराधना ही अपना कर्त्तव्य समझें। महात्मा गोखले का जीवन अपने देश की सेवा करने को बड़ी भारी शिक्षा देता है।

यों तो गोखले की मृत्यु पर सभी एङ्लो इण्डियन और देशी अखबारों ने शोक प्रकट किया है पर पूना के "केसरी" अखबार (लोकमान्य तिलक का पत्र है) अपना विचार पूर्ण सम्मति प्रकट की है, उसने गोखले के अनेक गुणों का उल्लेख करते हुए लिखा है -"*कोई इनकी बुद्धिमानी की प्रशंसा करते हैं, तो कोई इनके उद्योग को सराहते हैं, कोई इनको सरलता की मूर्त्ति मानते हैं, तो कोई इनके निरभिमानी होने के गीत गाते हैं। परन्तु हमारे मन में सब ऊपरी गुण हैं। और इस सम्बन्ध की कुछ बातों में किसी किसी का मान्यवर गोखले महोदय से मत भेद हो सकता है। ये सारे गुण और कर्तृत्व शक्ति जिस एक आन्तरिक सद्गुण से उत्पन्न होते हैं, उस गुण के सम्बन्ध में मतभेद होना बिलकुल सम्भव नहीं। और वह गुण **"निस्वार्थ अन्त करण से अपने आप को, देश सेवा में अर्पित करदेना है।"** बाल्य काल

* मराठी—"केसरी" लेख का यह अंश कानपुर के "प्रताप" से उद्धृत किया गया है।

में अभ्यास और युवाकाल में संसार सुख समाप्त करके अपनी शारीरिक और मानसिक शक्तियों के कर्तव्य शून्य होने पर लोक कल्याण के मार्ग में आनेवाले पुरुष मिले भी तो वे कुछ विशेष आदर के पात्र नहीं हैं परन्तु जब इन्द्रियां बल से भर रहा है, शरीर में सामर्थ्य लहरें मार रहा है, वृद्धावस्था कल्पना में भी नहीं दीखती है। सामर्थ्य संसार के सुख सम्पत्ति को घसीट लाने में एक भारी से भारी उद्योगी से कम नहीं है, संसार के आनन्द का रूप मनोहर रत्न सा दीखता हुआ चित्त की वृत्तियों का सहज ही में खींच सकता है— ऐसी अवस्था में और विशेष कर ऐसे संसार के सुख साधनों के मार्गों में से सुख और सम्पत्ति मिलने का दृढतर विश्वास होने हुये भी इन सब मनोहर दृश्यों पर से दृष्टि को बलपूर्वक पीछे हटा लेना और अपनी शक्ति से देश सेवा में लग जाना और उसमें आई हुई आपत्तियों के सहने में आनन्द मानना और इस भगीरथ प्रयत्न के लिये एकनिष्ठा से सतत परिश्रम करने को तैयार रहना, इन सब तपस्याओं के लिये मनोनिग्रह की आवश्यकता हुआ करती है। और इस प्रकार का मनोनिग्रह जिस पुरुष ने संसार में दिखाया वह धन्य है।" वास्तव में हम भी "केसरी" के शब्दों में यही कहेंगे कि मि० गोखले में यही गुण था। वे निस्वार्थ भाव से देश सेवा में जुटे हुये थे। जो लोग यह समझते हैं कि युवावस्था में हम नौकरी चाकरी करलें वृद्ध होने पर पेन्शन लेकर देश की सेवा करेंगे वे भूलते हैं भला कहीं तब देश सेवा हो सकती है जब सारे अंग शिथिल पड़गये हैं विवेक और विचार शक्ति का ह्रास होगया है मस्तिष्क की सब शक्तियाँ निकम्मी पड़

गई है। युवावस्था में जो स्वाभाविक उत्साह होता है व
क्षीण होगया है। ऐसे लोग जो देश सेवा करना चाहते हे
भूलते हैं। हमने ऐसे कितने ही व्यक्तियो को देखा है कि ज
वे गुलामी की बेडी काट कर किसी देश संस्था में घुसते
जब उस संस्था के पवित्र उद्देश्य में संस्था के सुयोग कर्मच
रियों के कर्तव्य पथ में कुछ ऐसी अड़चनें उपस्थित कर द
हे जिससे उस संस्था को लाभ हान के बदल उलटी हा
होती है। यदि गोखले महोदय यह सोचते कि युवावस्था
धन उपार्जन करल वृद्धावस्था में देश का कुछ कार्य करें
तो कदापि उनको इतनी सफलता प्राप्त नहीं होती। मनुष
का हृदय और मस्तिष्क सदव उसकी परिस्थिति के अनुसा
होता हे एक क्लर्क को चाहे जितना अधिक वेतन क्यों
मिलता हो पर उसका हृदय उच्च नहीं होता वह सदेव यह
सोचा करता है कि हमारा स्वामी मुझसे नाराज न होजाय
मुझे कहीं स रिश्वत मिले मेरा इतना वेतन होजाय यही बुि
उस सवार रहती है। पर एक पत्र सम्पादक का हृदय भि
ही होता है वह सोचता है कि देश की परिस्थति क सुधर
के लिये किन २ प्रयत्नों की आवश्यकता है अमुक स्थान म
अत्याचार हुआ है उसका कैस प्रतीकार किया जाय ?

जिस हृदय में ऐस पवित्र भाव हों वही स्वदेश सेवा का
व्रत ग्रहण कर सकता है बिडाल वृत्ति करनेवालों का न त
हृदय स्वदेशी हो सकता है न देश सेवकों का महत्व समझ
सकते हैं। गोखले महोदय के जीवन से हमको यह शिक्षा
प्राप्त होती है कि देश सेवा के लिये पवित्र विचार और पवित्र
हृदय की आवश्यकता है। जिनके जीवन का यह व्रत है कि

खाओ, पिओ और चैन उडाओ वे कदापि देशसेवा के पवित्र भाव का अवलम्बन नहीं कर सकते है । राजा मानसिंह और महाराणा प्रतापसिंह दोनो ही राजपूत थे दोनों ही वीर थे दोनों ही के जीवन का अधिकांश भाग बडे बडे भयङ्कर युद्धों में बीता था। पर इतिहास के पाठकों से यह अविदित नहीं है कि दोनों के हृदय में कितना अन्तर था जब महाराणा प्रतापसिंह ने अपनी जन्मभूमि के उद्धार के लिये अनेक कष्टों को फूलों के समान धारण किया था तब राजा मानसिंह ने मुगल सम्राट अकबर की शक्ति का विस्तार करना ही अपना कर्त्तव्य समझा था यह अन्तर परिस्थिति के अनुसार अपने हृदय और मस्तिष्क बनाने का था। हमारे कहने का तात्पर्य यह है कि संस्थाओं में जिस हृदय के मनुष्य पहुचते है, उस हृदय के अनुसार ही अच्छी से अच्छी संस्थाओं की दशा हो जाती है। यावज्जीवन " जी हुजूर " कहनेवाले संस्थाओं में पहुच कर उनके प्रतिष्ठित कर्मचारियों से, ऐसे कर्मचारियों से जिन्होंने अपनी समस्त हानि लाभ का परित्याग करके अपने से सम्बन्ध रखनेवाली संस्थाओं की सेवा का उच्च आदर्श अपने सामने रखा है उनसे बिडालवृत्तिवाले जैसा पहले ' जीहुजूर" कहते रहे है कहलाना चाहते है। यही कारण है कि भारतवर्ष की बहुतसी संस्थाओं के कार्यकर्त्ताओं में मतभेद हो जाता है, क्या मि० गोखले के जीवन से "जीहुजूर" कहलानेवाले कुछ बोध प्राप्त नहीं कर सकते है।

मिस्टर गोखले सच्चे साधु और संन्यासी थे अवश्य ही वे आजकल के साधु और सन्यासियों की भांति भगवे वस्त्र नहीं पहनते थे। हाथ में कमण्डल नहीं रखते थे तुम्बा नहीं

बाधते थे, पर सन्यासका जो लक्षण त्याग है वह उन्होंने सहर्ष देश सेवा के लिये अवलम्बन किया था और यावज्जीवन अपने आदर्श से टल नहीं। सुनते हैं, एकबार एक बुढिया ने उनसे पूछा था —आप इतने बडे आदमी होकर ७०) ७५) रुपया मासिक से अपना कैसे खर्च चलाते हैं इसपर मिस्टर गोखले ने बुढ़िया से कहा —"मुझे आश्चर्य है, कि आप ऐसा प्रश्न करती हैं। देश में ऐसे कितने ही पुरुष हैं, जिनको दिन में दो बार पूरा भोजन भी नहीं मिलता है मैं तो समझता हूं कि मेरा यह बहुत ज्यादा खर्च है"*। बुढिया यह सुनकर लज्जित और चुप होगई। क्या यह सच्चे साधु और सन्यासियों के लक्षण नहीं हैं?

महात्मा गोखले के समस्त परिवार के ऐसे ही विचार हैं। कलकत्ते के प्रसिद्ध अखबार " अमृत बजार-पत्रिका" ने गोखले की मृत्यु के पश्चात् यह छाप दिया था कि वे अपने परिवार को अच्छी आर्थिक स्थिति में नहीं छोड़ गये हैं, उनके परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। इस पर चारों ओर से लोग उनकी लडकियों की धन से सहायता करने को तैयार हुए। परन्तु लडकियों ने किसी से आर्थिक सहायता लेना स्वीकार न किया और कहा —"हमारे पिता, हमको ऐसी स्थिति में नहीं छोड गये हैं, जो हम किसी से सहायता

* भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्रने ऐसा ही प्रश्न, पंडित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर की माता से किया था कि माजी! विद्यासागर की माता के हाथ बिना गहने के कुछ शोभा नहीं देते इस पर विद्यासागर की माता ने कहा —'बेटा! विद्यासागर की माके हाथ गहने से शोभा नहीं पाते, परन्तु भूखों को दान देने से इन हाथों की शोभा है'।

ग्रहण करें। उन्होंने जो अङ्कगणित की पुस्तक लिखी है उससे हमको १२०, एक सौ बीस रुपये मासिक आमदनी है, जो हमारे खर्चे के लिये यथेष्ट है।" क्या गोखले महोदय की पुत्रियों का यह दृष्टान्त नहीं बतलाता है कि उन्होंने अपने समस्त परिवार को त्याग की शिक्षा दी थी। यदि उनकी पुत्रियां चाहती तो वे इस समय कमसे कम एक लाख रुपया एकत्रित कर सकती थीं, परन्तु नहीं उन्होंने ऐसा नहीं किया। उन्होंने अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिये अपनी जाति का कष्ट नहीं देना चाहा है। देश के कार्य्यों के बहाने पब्लिक से चन्दा इकट्ठा करके धन उड़ाने वाले क्या गोखले की पुत्रियों से शिक्षा ग्रहण नहीं कर सकते हैं? हमने एक संस्था के कार्य सञ्चालकों को देखा है जो अपने कार्य के लिये तो थर्ड या इन्टर क्लास में यात्रा किया करते हैं पर जब उन्हें पबलिक अर्थात् सर्वसाधारण के कार्य के लिये जाना होता है तब वे सकेण्ड क्लास में यात्रा करते हैं कभी कभी वे लोग अपने शिष्यों से गुप चुप अपना खर्च चलाने के लिये भेंट ले लिया करते हैं और कहते हैं कि हमारे पहले समय का कर्जा चला आता था वह आया है। हमारे ऐसे नेताओं या कार्यकर्त्ताओं को गोखले महोदय की निस्सहाय पुत्रियों का उदाहरण इस विषय में अनुकरण करना चाहिये।

वास्तव में गोखले महोदय ने देश सेवा के लिये जैसे धन पर लात मार दी थी वैसे ही उन्होंने मान प्रतिष्ठा की भी परवाह नहीं की था। पिछले दिनों में समाचार पत्रों में छपा था कि लार्ड हार्डिञ्ज ने गोखले को क० सी० आई० ई० की उपाधि प्रदान करने के लिये सम्राट को लिखा था, सम्राट ने गोखले

महोदय को उक्त उपाधि देना स्वीकार भी कर लिया था, बाकी पुर से प्रकाशित होनेवाले एक दैनिकपत्र ने इस पर लिखमारा कि यह गप्प है परन्तु यह गप्प नहीहै पीछे ज्ञात हुआ कि यह बात सत्य थी। परन्तु मि० गोखले ने उसको स्वीकार नहीं किया क्योंकि बडे लाट लार्ड हार्डिञ्ज ने उनकी मृत्यु पर शोक प्रकट करते हुए इसका अपनी वक्तृता में जिक्र किया है।

ऐसी कितनी ही बातें हैं कहा तक कहें ? गोखले इस ससारमें नहीं है पर वे अपनी ऐसी कितनी ही बातें छोड़ गये है जिनसे हम पग पग पर शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। कहा तक गिनावें ! इस लिये हम उन सब बातों को छोड़कर अन्त में हम श्रीमती सरोजिनी नायडू के एक लेख में से कुछ अंश उद्धृत करते है जिससे पाठकों को मिस्टर गोखले की सहृदयता का कुछ पता लगेगा। श्रीमती सरोजिनी जी का उक्त लेख—बम्बई के "क्रानीकल" नामक अखबार में छपा है। इस लेख के आरम्भ में सरोजिनी देवी गोखले महोदय के पत्र से यह वाक्यउद्धृत करती हैं—मैं चाहता हू कि मैं आपके पास इतना होता हू कि स्वयं आकर आप से मिलता मुझे विश्वास है कि आप का शोक गीतों द्वारा प्रकट होगा और ये गीत अमर रहेंगे।" सरोजिनी जी कहती है कि मिस्टर गोखले के यह सुन्दर शब्द ११ फरवरी को लिखे गये थे। उपर्युक्त शब्दों से प्रत्यक्ष में कोई ऐसी बात प्रतीत नहीं होती कि उनकी मृत्यु इतनी निकट है। यह पत्र मुझको अपने बाप के श्राद्ध के दिन मिला था" कहिये, पाठक ! आपने बहुत से योगियों की कथाए पढी हैं कि अमुक ने अपनी मृत्यु का समय इतने दिन पहले बतला

दिया था। क्या मिस्टर गोखले के इस पत्र से यह ध्वनि नहीं निकलती है कि उनको अपने अन्तिम समय का कुछ आभास सा होगया था। यदि इन्हें अपने अन्तिम समय का कुछ अनुमान न होता तो वे ऐसे शब्द क्यों लिखते?

श्रीमती सरोजिनी नायडू ने इस लेख में एक स्थान पर लिखा है —"मि० गोखले से मेरा व्यक्तिगत सम्बन्ध एक पत्र द्वारा हुआ और उसकी समाप्ति भी पत्र द्वारा ही हुई। सन १९०६ में कलकत्ते की समस्त भारतवर्षीय सामाजिक कान्फरेन्स में स्त्री शिक्षा सम्बन्धी प्रस्ताव मुझको सौंपा गया था, मैंने इस प्रस्ताव को उपस्थित करते समय कुछ ऐसे वाक्य कहे थे जिनका मिस्टर गोखले पर अच्छा प्रभाव हुआ उन्होंने शीघ्रता में मुझे बड़े प्रेम पूर्ण वाक्य लिखे। यद्यपि मैं अपने को वैसी प्रशंसा के अर्थात् गोखले ने जो कुछ लिखा था अयोग्य समझती हूं तथापि इसलिये उद्धृत करती हूं कि इससे हमारे भविष्य सम्बन्ध का सूत्रपात हुआ था। उन्होंने लिखा था —क्या मैं अत्यन्त सम्मान और सच्चे हृदय से आपको बधाई दे सकता हूं। आपकी वक्तृता में अत्यन्त ऊंची श्रेणी के बुद्धिमत्ता पूर्ण विचार की अपेक्षा अधिक विशेषता थी

क्षण मात्र को हम सब ने यही समझा था कि हम सब स्वर्गलोक में हैं। महात्मा गोखले के इन शब्दों से ज्ञात होता है कि वे कार्य करनेवालों को किस भांति उत्साहित किया करते थे। उनके इन सब गुणों के लिये आज सारा देश रो रहा है। आओ! पाठक!! आओ!!! हम महात्मा गोखले के जीवन से सब शिक्षाएं ग्रहण करके अपना आदर्श जीवन बनावें उक्त महात्मा के उद्देश्यों का प्रचार करके उनकी आत्मा

को शान्ति प्रदान करें। बस अन्त में यही प्रार्थना है कि गोखले महोदय जैसे क्रियाशील महात्मा का इस देश में पुनः जन्म हो, उनकी मृत्यु से इस देश में क्रियाशील पुरुष का और म… नता का, जो आसन खाली हुआ है, वह पूर्ण हो गोखले की कमी किसी तरह से दूर हो। यही हमारी हार्दिक इच्छा है॥

॥ इति ॥



ओंकार आदर्श-चरितमाला

सज्जनों को विदित हो कि ओंकार प्रेस प्रयाग ने संसार के आदर्श पुरुषों के जीवन चरित निकालने आरम्भ कर दिये हैं। प्रत्येक जीवन चरित का मूल्य केवल ।-) आना है। प्रत्येक जीवनचरित में १०० से लेकर लगभग १५४ पृष्ठ तक होते हैं और चरितनायक का एक सुन्दर चित्र भी दिया जाता है। प्रत्येक मास में लगभग दो जीवनचरित निकाले जाते हैं। इस प्रकार ४०० जीवनचरित निकाले जायगे। यदि आप अपनी तथा अपने बालक तथा बालिकाओं की उन्नति चाहते हैं तो आप पढ़िये और अपने बच्चों को पढ़ाइये। जो लोग ।) आना भेजकर ओंकार आदर्श-चरितमाला के ग्राहकों में नाम लिखा लेंगे। उनको ।-) कीमत की जीवनी केवल ।) ही आने में मिलेंगी। प्रत्येक मास में दो जीवनचरित ।।=) में मय वी० पी० और डाक महसूल के घर बैठे पहुंचेंगे। ग्राहकों को इसमें दो प्रकार का सुभीता है एक तो पुस्तकें डाक से मारी न जावेंगी। दूसरे समय पर आपने हो तुरन्त मिल जाया करेंगी

छपे हुये जीवन चरित

१—स्वामी विवेकानन्द ।-)	११—महात्मा गान्धी ।-)
२—स्वामी दयानन्द ।-)	१२—मि० ग्लैडस्टन ।-)
३—महात्मा गोखले ।=)	१३—पृथ्वीराज चौहान ।=)
४—समर्थ गुरु रामदास ।=)	१४—महात्मा टाल्स्टाय ।=)
५—स्वामी रामतीर्थ ।-)	१५—श्रीमती एनी बेसेन्ट ।-)
६—महाराणाप्रतापसिंह ।-)	१६—दादाभाई नौरोजी ।-)
७—आत्मवीर सुकरात ।=)	१७—ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ।-)
८—गुरु गोविन्दसिंह ।-)	
९—नेपोलियन बोनापार्ट ।-)	१८—रमेशचन्द्र दत्त ।-)
१०—धर्मवीर प० लेखराम ।-)	

मैनेजर ओंकार प्रेस, प्रयाग।